ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 17 अंक-23 मार्च-I, 2017 (पाक्षिक) माउण्ट आबू 8.00

सशक्तिकरण हेतु परमात्म ज्ञान अपरिहार्य

शांतिवन। स्वयं को पहचानने के लिए परमात्मा का ज्ञान होना ज़रूरी है। इससे ही मनुष्य अपने भीतर की शक्तियों को पहचान सकता है और स्वयं को सशक्त बना सकता है। उक्त विचार ब्रह्माकुमारीज़ के शांतिवन परिसर में आयोजित 'आत्मा के सशक्तिकरण के लिए परमात्म ज्ञान कितना ज़रूरी' विषयक तीन दिवसीय शिविर के उद्घाटन अवसर पर मध्य प्रदेश के ऊर्जा मंत्री पारसचंद जैन ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि संस्थान की ओर से मनुष्य जीवन के लिए ज़रूरी 'स्वयं के लिए चिंतन' विषय को लेकर शिविर का आयोजन वाकई सराहनीय है।

संस्थान के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर ने कहा कि भगवान धरती पर अवतरित होकर मनुष्य को खुद की शक्तियों की अनुभूति करवा रहे हैं, पर भौतिकवाद के इस दौर में मनुष्य के पास खुद के लिए समय नहीं है। मनुष्य ऐसी चीज़ के पीछे भाग रहा है जो उसकी है ही नहीं। मनुष्य को अब खुद के लिए भी कुछ वक्त निकालकर परमात्म ज्ञान प्राप्त करने का समय आ गया है।

इस समारोह में ब्र.कु. डॉ. निर्मला, ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. भरत तथा ब्र.कु. शशिप्रभा ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई तथा अपने विचार सबके सामने रखे। बड़ी संख्या में देश के विभिन्न हिस्सों से आए लोगों ने इस आध्यात्मिक शिविर का लाभ लिया।

पारसचंद जैन को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. निर्वैर तथा ब्र.कु. डॉ. निर्मला।

नशा मुक्ति अभियान

शिवहर-विहार। समाहरणालय के मैदान में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'त्रिदिवसीय चरित्र निर्माण आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी एवं नशा मुक्ति अभियान' के कार्यक्रम के उद्घाटन पश्चात् सभा को सम्बोधित करते हुए पुलिस अधीक्षक प्रकाश नाथ मिश्रा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ के शिवहर सेवाकेन्द्र द्वारा नशामुक्ति हेतु चलाया जा रहा अभियान बहुत ही महत्वपूर्ण है। ये संस्था यह कार्य व्यक्तिगत स्तर पर कर रही है और इस प्रयास से व्यक्ति सहज ही इस लत से मुक्त हो जाता है।

जिलापदाधिकारी राजकुमार जी ने बताया कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा न केवल आध्यात्मिक शिक्षाएँ दी जाती हैं, बल्कि श्रेष्ठ समाज के निर्माण में भी इस विश्व विद्यालय की भूमिका सराहनीय है।

इस मौके पर ब्र.कु. भारती, ब्र.कु. उमेश, पूर्व जिला अध्यक्ष अजब लाल चौधरी, ब्र.कु. उदय तथा अन्य अतिथियों ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किये।

पुलिस अधीक्षक प्रकाश नाथ मिश्रा को शॉल पहनाकर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. भारती।

तीन देशों के उभरते वैज्ञानिकों को आध्यात्मिक ट्रेनिंग

नासा द्वारा 13वें एशियन रीजनल स्पेस सेटलमेंट डिज़ाइन कॉम्पिटीशन का ओ.आर.सी. में आयोजन

भारत, पाकिस्तान तथा चीन के स्पेस साइंस से जुड़े होनहार वैज्ञानिकों तथा उनके साथ आये अध्यापकों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. आशा।

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। नासा द्वारा आयोजित 13वें एशियन रीजनल स्पेस सेटलमेंट डिज़ाइन कॉम्पिटीशन का आयोजन हुआ। इस प्रतियोगिता में एशिया के तीन देशों भारत, पाकिस्तान एवं चाइना के तीन सौ छात्र शामिल हुए। छात्रों की पाँच टीम्स बनाई गई। प्रत्येक टीम में लगभग पचास तक छात्र-छात्रायें सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का उद्देश्य था बच्चों के अंदर रचनात्मकता, तकनीकी एवं अंतरिक्ष की जानकारी देना। 4 दिवसीय इस प्रतियोगिता में स्कूली स्तर के 10वीं से 12वीं तक के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जाता है। प्रतियोगिता में विशेष रूप से छात्रों को अंतरिक्ष में डिज़ाइन की जाने वाली कॉलोनीज़ के प्रारूप तैयार करवाए जाते हैं। अनीता गेल, नेशनल स्पेस सोसायटी, यू.स.,स्पेस सेटलमेंट डिज़ाइन कॉम्पिटीशन की संस्थापक ने बच्चों को अब तक किये गए विभिन्न कार्य-कलापों से अवगत कराते हुए कहा कि इस कार्यक्रम के द्वारा बच्चों का रचनात्मक विकास होता है एवं उन्हें विज्ञान के क्षेत्र में अपनी भूमिकाओं का भी पता चलता है।

ओ.आर.सी. की निदेशिका ब्र.कु. आशा ने अपने आशीर्वचन में कहा कि मुझे ये देखकर बहुत खुशी होती है कि आज युवाओं के अंदर विज्ञान के प्रति अच्छी रूचि है। उन्होंने कहा कि विज्ञान के साथ-साथ अगर हम जीवन में आध्यात्मिक मूल्यों को लेकर चलते हैं तो विज्ञान मानव को एक बेहतर दिशा प्रदान कर सकता है।

मोहम्मद ज़ाहिद,अध्यापक,लाहौर ने कहा कि वो लगातार दस वर्षों से यहाँ आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि इतने प्यार से तो कोई घर पर भी हमारा ध्यान नहीं देता जितने प्यार से हमारी यहाँ खातिरी की गई। यहाँ पर अपने घर से भी अच्छा लगता है।

चीन के विद्यार्थियों ने कहा कि हमें यहाँ का भोजन बहुत अच्छा लगा। सभी ने राजयोग मेडिटेशन में गहन रूचि ली।

कार्यक्रम में ब्र.कु. मोनिका ने सभी को योग के बारे में बताते हुए कहा कि योग से हमारे अंदर एकाग्रता आती है, जिससे चीज़ों को समझने में और भी आसानी होती है। उन्होंने एशियन रीजनल स्पेस सेटलमेंट डिज़ाइन कॉम्पिटीशन ने किया।

इस कॉम्पिटीशन में कल्चर एविएशन टीम विजेता रही। विजेता टीम के सभी सदस्यों

प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य युवाओं में विज्ञान के प्रति विशेष रूचि पैदा कर उन्हें रचनात्मक बनाना

कॉम्पिटीशन के दौरान कार्यशाला में स्पेस सेटलमेंट डिज़ाइन करते हुए तीन देशों से आये बच्चे।

कहा कि साइंस का साइलेंस से बहुत गहरा सम्बंध है। जितना हमारा मन शांत रहता है, उतनी ही हम नए-नए आविष्कार करने के लिए प्रेरित होते हैं।

कार्यक्रम में प्रो. सुहास पेडनेकर ने मुख्य अतिथि के रूप में छात्रों को प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर डगलस स्टॉक एवं वैज्ञानिक हीथर पॉल ने भी बच्चों को सम्बोधित किया। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक,संयोजक, को अमेरिका के अंतरिक्ष केन्द्रों को देखने का अवसर मिलता है। प्रतियोगिता में भाग ले रहे विद्यार्थियों ने अंतरिक्ष में कॉलोनी बनाने के अनेक प्रारूप तैयार किये। नासा से जुड़े अनेक वैज्ञानिकों और तकनीकी विशेषज्ञों ने सभी को उपग्रह संचालन प्रणाली एवं अंतरिक्ष से सम्बन्धित बहुत सी जानकारियाँ भी दी और फिर से यहाँ पर आकर ऐसे आयोजन में सम्मिलित होने की इच्छा जताई।

कार्यक्रम में मोमेन्टो प्राप्त करने के पश्चात् समूह चित्र में प्रतिभागी।

स्व अस्तित्व की पराकाष्ठा को प्रकट होने देना - 'तप'

अक्सर जब हम किसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कोई साधना या तप करते हैं, ताकि हमें वो ऊर्जा मिल जाये जिससे हमारा लक्ष्य हासिल हो सके। तो वास्तव में तप का अर्थ है क्या? तप शब्द आते ही मानस पर वो चित्र उभर के आता है कि तप माना अपने को कष्ट देना, गलाना, परेशान करना। अगर ऐसा ही है, तब तो तप एक आत्महिंसा हो गई! दुनिया में दो

- ब्र. कु. गंगाधर

तरह के लोग हैं, दूसरे को सताने वाले और अपने को सताने वाले। इनमें कुछ फर्क नहीं है। जहाँ तक सताने का संबंध है, ये एक जैसे ही हैं। इनकी कोटियाँ एक जैसी नहीं हैं। कोई दूसरे को अगर सताये तो हम उसको उदण्ड कहते हैं, और अपने को सताये तो उसको संत कहते हैं। हम भी गजब के लोग हैं! हमारी कोटियाँ भी गजब की, हमारी व्याख्याएँ भी अद्भुत!

अरे, दूसरों को सताये, वह उतना उदण्ड नहीं है, क्योंकि दूसरा अपनी आत्मरक्षा भी करता है। लेकिन जो खुद को सताये, वह तो अपने साथ ज़्यादती है क्योंकि खुद की अब कोई आत्मरक्षा करने वाला भी नहीं है। अब तो जिसको हमने रक्षक समझा था, वही सता रहा है! अब तो जिससे हम बचना चाहते थे, वही मार रहा है! अब कौन बचायेगा! जिसको हमने सुरक्षा मानी थी, वही झूठी सिद्ध हो गई।

इसलिए जो कायर हैं वो दूसरों को सताने में डरते हैं– क्योंकि दूसरों को सताने में खतरा है; दूसरों को छेड़ने में खतरा है! जैसे कोई मधुमक्खी के छत्ते को छेड़ दे, दूसरे को छेड़ोगे तो दूसरा बदला लेगा, आज नहीं कल, कल नहीं परसो। कौन जाने खतरनाक आदमी हो।

वो बात याद है ना, मुल्ला नसिरुद्दीन एक रास्ते से जा रहा था। ऊपर से एक ईंट गिरी, उसके सिर पर पड़ी। भनभना गया। उठाई ईंट और गुस्से में जीना चढ़कर ऊपर गया कि सिर खोल दूंगा। कौन है जिसने ईंट पटकी? देखता भी नहीं।

ऊपर जाकर देखा तो एक पहलवान खड़ा था। अभी दण्ड बैठक लगाकर ही उठा था। पहलवान को देख मुल्ला चौकड़ी भूल गया। पहलवान ने पूछा: 'कहो क्या काम है?' उसने कहा: 'कुछ नहीं, आपकी ईंट गिर गई थी, वही वापस करने आया हूँ। अरे, कभी भी ज़रूरत हो तो पड़ोस में ही रहता हूँ, आवाज़ दे दें। कोई चीज़ गिर जाये, कुछ हो तो उठाकर ला दूंगा। सेवा तो हमारा धर्म है ना।'

भूल गये चौकड़ी! गये तो थे खोल दूंगा सिर, ईंट लौटाकर वापस अपना सिर मलते आ गये।

जो लोग दूसरों को नहीं सता सकते, उनका दूसरों को सताना खतरे से खाली नहीं है, जोखिम का काम है, वे अपने को सताने लगते हैं।

तप का यह अर्थ नहीं है, तप का अर्थ होता है - तप शब्द में ही अर्थ छिपा हुआ है: तप यानि तपिश, एक ऊर्जा, एक गर्मी। जैसे सूरज भीतर उग आया हो। जैसे जीवन की सारी ऊर्जा जागृत हो गई हो। जैसे सोये स्रोत खुल गये हों, झरने फूट पड़े हों। एक दीप्ति, एक ओजस।

जिस व्यक्ति ने स्वयं के सत्य को जाना, जिसके जीवन में एक गर्मी होगी- क्रान्ति की, बगावत की, उसके हृदय में एक अग्नेयता होगी। क्योंकि उसके भीतर आत्मज्योति का एक दीप जलेगा। उसके भीतर ठंडा बर्फ जैसा हृदय नहीं होगा, मुर्दा हृदय नहीं होगा, जीवंत हृदय होगा। तप का अर्थ है: ऊर्जा, गर्मी। जैसे सूरज निकल आता है तो फूल जो बंद थे रात भर, खुल जाते हैं; पक्षी जो रात भर सोये रहे, जग जाते हैं; जिनके कंठ रात भर चुप थे, अचानक गीतों में फूट पड़ते हैं; वैसे ही सत्य के अनुभव के साथ तुम्हारे जीवन में ऊर्जा का पदार्पण होता है। सूरज उगता है, फूल खिलते हैं, जागरण आता है - और गीत, और नृत्य, और उत्सव।

- शेष पेज 8 पर

हमारी याद में क्षमा भाव, रहम भाव हो, लोभ मोह नहीं

बाबा कहता है एक दिन आयेगा जो हमारे से ज़रा कुछ थोड़ा भी अभिमान होगा तो वो बिचारा छुट्टी ले लेगा। अभी ऐसी स्थिति में कभी कभी वो बीच में घुस जाता है। अभिमान माना क्या मैं नींद में सोई हुई थी?
कार्य-व्यवहार में कई भाई बहनें सम्बन्ध सम्पर्क में आते हैं तो मैं, मैं जब बोल रहे हैं तो चेक करना है कि अभिमान से तो नहीं बोल रहे हैं? बाबा ने ऐसी देही-अभिमानी स्थिति बनाई है, तभी तो बाबा याद रहता है। तो बाबा की याद बल देती है। मीठा बाबा, प्यारा बाबा, शुक्रिया बाबा। तन यहाँ है तो मन कहाँ है? मन को यहाँ बैठे बाबा की तरफ लगाना है। कभी भी बाबा के होते बाबा के सामने बैठे हम कभी हिलते नहीं थे। जब बाबा के सामने बैठे हो तो घड़ी घड़ी ऐसे नहीं करो, पीछे वाले कैसे देखेंगे।
बाबा को फॉलो करने से हम बहुत आगे जा सकते हैं, सिर्फ कहाँ भी खड़े न हो जावें। उसके लिये बाबा ने कहा इच्छा मात्रम् अविद्या, यह बहुत अच्छी स्थिति है। इच्छा की विद्या ही नहीं है। क्या करेंगे? मैं पदमापदम भाग्यशाली हूँ जो डायरेक्ट भगवान ने हमको पढ़ाया है। बाबा ने जो सिखाया है वो शिक्षाओं का भण्डारा भरपूर है। ब्रह्माबाबा से तो शिवबाबा ने कराया, पर हम बच्चों से अभी कौन करा रहा है? तो आँखों के सामने कौन आता है? कहीं आँख नहीं डूबती है, शाहों का शाह बेफिकर बादशाह, आत्म-अभिमानी स्थिति से पवित्रता जैसे रग रग में काम कर रही है। तो जहाँ भी जायेंगे बाबा की भासना आयेगी। हम बाबा नहीं हैं, बाबा तो बाबा है, मम्मा मम्मा है परन्तु पढ़ाई इतनी ऊंची है, आज सभा को देख कोई भी समझ सकता है कि ज्ञान क्या है? योग क्या है? ज्ञान सिर्फ सुनाने वाला नहीं है परन्तु ज्ञानी तू आत्मा बाबा को प्रिय लगता है, यह तो आँखों से देखा है। इस संगमयुग पर बाबा की याद ऐसी जिसमें क्षमा भाव, रहम भाव है। उसमें न लोभ है, न मोह है। लोभ है मुझे अच्छा मकान बनाना है, मुझे यह करना है... अरे, आजकल जहाँ तहाँ कुर्सियाँ होती हैं, कई कुर्सियों पर बैठते हैं पर हमारे ज़माने में कुर्सी पर नहीं बैठते थे। सिर्फ ऑफिस में दो कुर्सी थी, एक कुर्सी पर बाबा बैठते थे दूसरी कुर्सी पर ईशू बहन। बाबा पत्र लिखता था वो सीन भी बहुत अच्छी थी। तो बाबा मेरा मैं बाबा का तभी कहते हैं जो बाबा का खज़ाना है ना, वो खज़ाना हमने यूज़ किया है, करेंगी।
कई आत्मायें बाबा का परिचय लेते ही, मिलते ही बाबा के बन गये। विश्व में आज कितनी सेवायें हो रही हैं, सेवायें तो होती रहेंगी क्योंकि बाबा कहता है, जो खज़ाना मिला है वो बाँटो। सच्ची दिल, बड़ी दिल, पर इसके लिए दिल में एक दिलाराम के सिवाए और कुछ नहीं हो। ऐसी अपनी स्थिति पर ध्यान रखना, यह है रीयल्टी और रॉयल्टी। जैसे कोई

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

बैरिस्टर बनने वाला होता है तो वो पहले ही पढ़ता है, तो उसको अन्दर से भावना है जल्दी जल्दी पास हो जाऊंगा और सेवा करूँगा।
विराट रूप माना वैराइटी बाबा के बच्चे। जो पहले क्रिश्चियन थे, मुसलमान थे वो बदल गये। यहाँ मधुबन में कमरों में, किचन आदि में सफाई रखते हैं ना, यह बहुत अच्छा है। हमें और कुछ नहीं चाहिए सिर्फ सच्चाई, सफाई, सादगी। तो पहले पहले भारत में कई माताओं बहनों के घर में जब गई, तो जाते ही सारे घर का चक्कर लगाती थी, देखती थी बेडरूम कैसी है? कितना साफ है, डायनिंग रूम कैसी है? बर्तन ऐसे साफ चमक रहे हैं। भोजन खाके थाली हम खुद धोती थी। कहते हैं कर्म बड़े बलवान हैं, बाबा सर्वशक्तिवान है। वन्डर तो यह है कि इस साइड में है बाबा, वो शक्ति दे रहा है। यहाँ है मेरा भाग्य, कभी बहाना देना नहीं आता है।

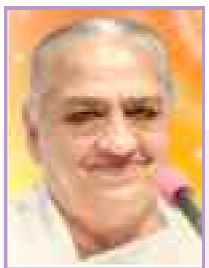

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

माया का काम है आना, हमारा काम है उसपर विजय पाना

ओम् शांति का महामंत्र हम सबको सहयोग देता है। कोई भी व्यर्थ बात अगर मन में आ जाये तो ओम् शांति अर्थ सहित कहो तो व्यर्थ समाप्त हो जायेगा, क्योंकि स्मृति आ जाती है कि मैं शान्त स्वरूप आत्मा हूँ। तो स्मृति से समर्थी यानि शक्ति आ जाती है और उस शक्ति के आगे समस्या या कोई भी व्यर्थ बातें सहज ही खत्म हो जाती हैं। जैसे लाइट का स्विच ऑन होते ही समर्थी आ जाती है और उस समर्थी अर्थात् शक्ति द्वारा अंधकार की समाप्ति हो जाती है। तो यह प्रैक्टिस बार-बार सारे दिन में करनी चाहिए। बाबा ने यह महामंत्र हम सब बच्चों को एक साधन दे दिया है। जैसे साइंस के भिन्न-भिन्न साधन हैं, उन साधनों द्वारा दिन से रात हो जाता है, रात से दिन हो जाता है। गर्मी से सर्दी बदल जाती है, सर्दी से गर्मी बदल जाती है तो हमारा यह ओम् शांति महामंत्र दु:ख से सुख-स्वरूप में बदल जाता है। व्यर्थ से समर्थ बना देता है।

बाबा ने बहुत स्नेह से हम बच्चों को यह शिक्षा दी है कि समस्या शब्द खत्म करके समाधान, कारण शब्द खत्म करके निवारण शब्द यूज़ करना। ऐसा, वैसा... यह बहानेबाज़ी की बातें हैं। बस, करना है तो करना ही है। इसने कहा, इसने किया या प्रकृति की कुछ आपदा आ गई इसलिए ऐसा हो गया, लेकिन यह तो बाबा ने कह दिया है कि यह तो होगा। संगम का यह एक जन्म पढ़ाई और इक्कीस जन्मों की प्राप्ति का है। तो उस प्राप्ति के आगे कुछ तो पेपर होंगे ही। छोटे से क्लास में भी पेपर होते हैं, हमारी यह पढ़ाई तो कितनी ऊँची है तो पेपर भी इतने ही होंगे, और मास्टर सर्वशक्तिमान के आगे अगर कोई समस्या आई, कारण आये तो क्या बड़ी बात है! बाबा कहते, यह तो कुछ भी नहीं है, क्योंकि बाबा पहले ही बता देता है। माया आयेगी तब तो मायाजीत बनेंगे, इसलिए माया से न घबरा करके उसके ऊपर जीत पाओ। उसका काम है आना, हमारा काम है विजय प्राप्त करना। यह काम नहीं भूलें, अगर अपना काम याद होगा तो घबरायेंगे नहीं, विजयी हो जायेंगे।

एक है परमात्मा के गले का हार बनना, दूसरा है माया से हार खाना। अभी आपको कौन-सा हार चाहिए? जो माया से हार खाते हैं वो बाबा के गले का हार नहीं बन सकते। तो यह वरदान बाबा का जो है कि गले का हार बनना है, उसका यादगार विजयमाला पूजी जाती है। इसीलिए कभी भी माया से घबराओ नहीं। साक्षी दृष्टा की सीट पर बैठ देखो तो लगता है जैसेकि मिक्की माउस का खेल है।

इसके साथ ही बाबा ने हमें लाइट हाऊस भी कहा है। लाइट हाऊस का काम होता है चारो ओर रोशनी देना। हमें विश्व की अशांत, दु:खी और तड़फती हुई आत्माओं के लिए ज्ञान की रोशनी देने वाला सच्चा लाइट हाऊस बनना है। इसके लिए हमारा मन सदा सकारात्मक ही सोचे क्योंकि हमारे आसपास, हमारे विचारों के अनुरूप वातावरण बनता है जिसका प्रभाव आसपास के लोगों पर होता है। हम हैं रूहानी लाइट हाऊस- शांति, शक्ति और खुशी का प्रकाश फैलाने वाले। रूहानी लाइट हाऊस की रोशनी तो पॉवरफुल होती है तो इतनी शक्तियाँ जमा करके लाइट हाऊस बनते हुए वायुमंडल को परिवर्तित करना है। रूहानी लाइट हाऊस अर्थात् अपनी सर्व कर्मेन्द्रियों पर आत्मा का पूर्ण नियंत्रण। समझो कि हमारी दृष्टि पर हमारा नियंत्रण नहीं है तो दृष्टि द्वारा जो गलत देखा, उसका संकल्प चलेगा, अनेक प्रश्न उठेंगे और दृष्टि के साथ साथ संकल्प की शक्ति भी व्यर्थ जायेगी।

ऐसे प्रत्येक में कोई ना कोई प्रवृत्ति होती है, किसी को व्यर्थ सोचने की, व्यर्थ देखने की आदत रहती है। छोटी सी बात पर भी सोच बहुत चलेगी अर्थात् सोचने की शक्ति पर मनुष्य का नियंत्रण नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं परख करनी चाहिए कि मेरी कौन सी कर्मेन्द्रियाँ नियंत्रण में नहीं हैं।

कर्मेन्द्रियों पर काबू रखने के लिए एक सहज अभ्यास है कि जब हम चाहे कितना भी व्यस्त रहते हों, लेकिन मैं आत्मा मालिक इन इंद्रियों से यह काम करा रही हूँ जैसे कोई डायरेक्टर या बॉस होता है वह अपने ही कमरे में एक कुर्सी पर बैठा रहता है, परंतु उसे स्वाभाविक तौर पर यह याद रहता है कि मैं डायरेक्टर हूँ और यह कर्मचारी जो भी मेरे साथी हैं उनसे मैं काम करवाने वाला हूँ। मैं ज़िम्मेवार हूँ। इसी प्रकार यह भी याद रहना चाहिए कि मैं आत्मा करन-करावनहार हूँ, यह कर्मेन्द्रियाँ मेरी कर्मचारी साथी हैं।

संस्कार और पुरुषार्थ में ईज़ी रहना है। ईज़ी माना जैसा समय वैसे हम अपने को मोल्ड कर सकें। किसी बात को पकड़कर रुको नहीं, यह क्यों हुआ? यह क्या हुआ? इस तरह के प्रश्नों में उलझने से फायदा कुछ भी नहीं। यदि व्यर्थ संकल्प चलाने की आदत पड़ गयी तो उससे छूटना बहुत मुश्किल हो जायेगा। सबसे बड़ी अथॉरिटी अनुभव की है। सबसे बड़ा प्रमाण भी अनुभव का होता है। सारा दिन परमात्मा की याद में स्थित होकर कर्म करने का अनुभव करो। सदा सभी को आत्मिक दृष्टि से देखने का अनुभव करो।

रंगों से करें शक्ति का संचय

कौन सी बीमारी किस गुण व शक्ति की कमी से होती है, और कौन सी बीमारी के लिये, कौन सी किरणें और कौन सा अभ्यास करें, जो जल्दी ठीक हो जाये। जैसे हमारे शरीर का फोटोग्राफ निकलता है, वैसे ही हमारे आभामंडल(ऑरा) का भी फोटोग्राफ निकलता है, उसे कलरियन फोटोग्राफी कहते हैं।

उसमें हमारे शरीर के सातो चक्र विविध रंगो में पाये जाते हैं। हर चक्र हमारे शरीर से संबंधित सात विभागों को आत्मिक ऊर्जा पहुँचाता है। इन सातो विभागों से सम्बन्धित, सात मुख्य ग्रंथियाँ व मुख्य मुद्रायें व आत्मा के गुण भी हैं।

जिस विभाग का, जिस चक्र का रंग हल्का हो जाता है या घूमने की गति कम हो जाती है या चक्र उल्टा घूमने लगता है, तो उससे संबंधित अवयवों में बीमारी शुरू हो जाती है। यदि हम परमात्मा से चक्र से संबंधित गुण व किरणें प्राप्त करते हैं, तो चक्र सुचारू रूप से कार्य करने लग जाता है और बीमारी ठीक हो जाती है। शरीर का हर अंग आत्मा के सातो गुणों से पोषित होता है, एक गुण उस अंग के विकास व संभाल के लिए अति आवश्यक है।

1. सहस्रार चक्र
– पीनियल ग्रंथी और पाचन शक्ति
– रंग :- जामुनी
– गुण :- आनंद– खुशी की चरमसीमा आनंद कहलाती है।
– बीमारी :- तनाव, नींद न आना, हाई ब्लडप्रेशर, डिप्रेशन, एसिडिटी, गैस पाचन से सम्बंधित बीमारी आदि।
– परमात्मा से संबंध :- सिविल सर्जन

विज़न :- दृश्य बनायें और अनुभव करें, मैं आत्मा शिवबाबा के सम्मुख बैठी हूँ, उनसे दिव्य चमकती हुई जामुनी रंग की किरणें, आनंद के गुण सहित, मेरे सहस्त्रार चक्र में प्रवेश कर रही हैं। बाबा मुझे स्पर्श कर रहे हैं।(इसे महसूस करें) जिससे मैं आत्मा आनंद का पुंज हो चुकी हूँ। मैं आत्मा मास्टर आनंद का सागर बनती जा रही हूँ। चक्र से संबंधित अवयवों की व्याधियाँ ठीक हो चुकी हैं। मैं आत्मा आनंद का अनुभव कर रही हूँ।

2. आज्ञा चक्र
– पिट्यूटरी ग्रंथि और मष्तिक(brain) नर्वस सिस्टम
– रंग :- गहरा नीला
– गुण :- ज्ञान
– बीमारी :- ब्रेन संबंधित, सिरदर्द, मायग्रेन, नर्वस सिस्टम, आँख, कान, नाक, दांत-मसूड़ें संबंधित।
– परमात्मा से संबंध :- सिविल सर्जन

विज़न:- दृश्य बनायें और अनुभव करें, मैं आत्मा शिवबाबा के सम्मुख बैठी हूँ, उनसे दिव्य चमकती हुई गहरे नीले रंग की किरणें ज्ञान के गुण सहित मेरे आज्ञा चक्र में प्रवेश कर रही हैं। बाबा मुझे स्पर्श कर रहे हैं...इसे महसूस करें। मैं आत्मा मास्टर ज्ञान सूर्य बनती जा रही हूँ... जिससे चक्र से संबंधित अवयवों की व्याधियाँ ठीक हो चुकी हैं। बुद्धि विवेकशील व तीक्ष्ण हो चुकी है।

3. विशुद्धि चक्र
– थायरॉइड ग्रंथी और फेफड़े
– रंग :- आसमानी
– गुण :- शांति
– बीमारी :- श्वास से सम्बन्धित बीमारी, टी.बी., न्यूमोनिया, दमा, थायरॉइड संबंधित, स्वरयंत्र, अन्नालिका, श्वासनलिका संबंधित।
– परमात्मा से संबंध - सिविल सर्जन।

विज़न :- दृश्य बनायें और अनुभव करें, मैं आत्मा शिवबाबा के सम्मुख बैठी हूँ। उनसे दिव्य आसमानी रंग की किरणें शांति के गुण सहित मेरे विशुद्ध चक्र में समा रही हैं। बाबा मुझे दृष्टि दे रहे हैं। मुझमें शांति समाती जा रही है। जिससे चक्र से संबंधित अवयवों की व्याधियाँ ठीक हो चुकी हैं। मैं असीम शांति का अनुभव कर रही हूँ।

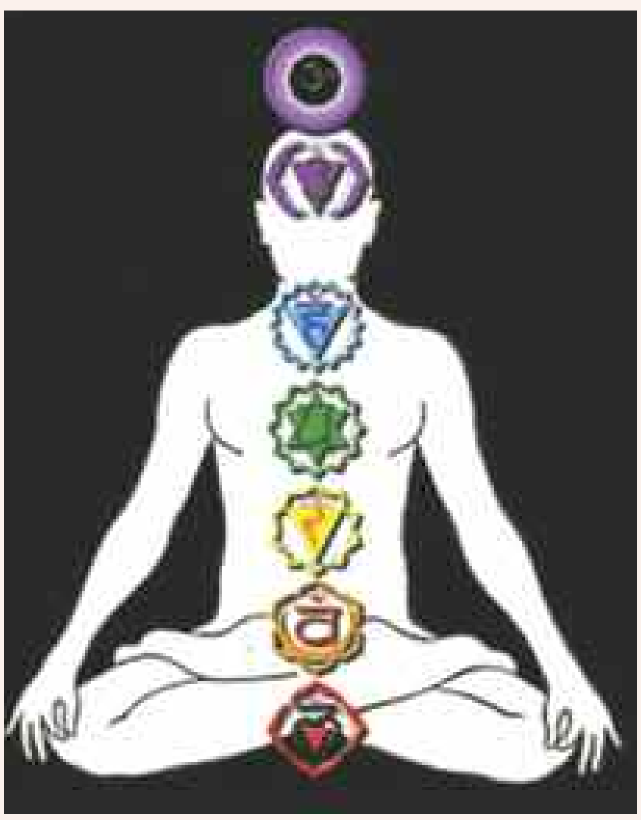

4. अनहद चक्र
– थायमस ग्रंथी और हृदय
– रंग :- हरा
– गुण :- प्रेम
– बीमारी - हृदय संबंधित, हार्टअटैक, हार्ट में छेद, धड़कन बढ़ना, हाई बी.पी., कोरोनरी आर्टरी डिज़ीज़, ब्लॉकेज आदि। प्रेम का सम्बन्ध दिल से होता है। जीवन में जब प्रेम की कमी आती है तो हमें हृदय सम्बन्धी बीमारी हो सकती है।
– परमात्मा से संबंध :- सिविल सर्जन।

विज़न :- दृश्य बनायें और अनुभव करें, मैं आत्मा शिवबाबा के सम्मुख बैठी हूँ। उनसे दिव्य चमकती हुई हरे रंग की किरणें प्रेम के गुण सहित मेरे अनहद चक्र में समा रही हैं। बाबा मुझे दृष्टि दे रहे हैं, जिससे चक्र से संबंधित अवयवों की बीमारियाँ ठीक हो चुकी हैं। मैं असीम प्रेम का अनुभव कर रही हूँ।

5. मणिपुर चक्र
– पेनक्रियाज़ ग्रंथी और हॉर्मोन्स
– रंग :- सुनहरा पीला
– गुण :- सुख
– बीमारी :- लिवर संबंधित, डायबिटीज़, हार्मोनल इन्बैलेंस आदि
– परमात्मा से संबंध :- सिविल सर्जन

विज़न - दृष्य बनायें एवं अनुभव करें, मैं आत्मा शिवबाबा के सम्मुख बैठी हूँ... उनसे दिव्य सुनहरी चमकती हुई पीले रंग की किरणें सुख के गुण सहित मेरे मणिपुर चक्र में समा रही हैं। बाबा मुझे दृष्टि दे रहे हैं। मैं आत्मा मास्टर सुख का सागर बनती जा रही हूँ। जिससे चक्र से संबंधित अवयवों की बीमारियाँ ठीक हो चुकी हैं। मैं असीम सुख का अनुभव कर रही हूँ।

6. स्वादिष्टान चक्र
– ओवरीज़, टेस्टीज़ ग्रंथी और इम्यून सिस्टम(रोगप्रतिकारक शक्ति)
– रंग :- नारंगी
– गुण :- पवित्रता
– बीमारी :- इन्फेक्शन, त्वचारोग, रिप्रोडक्टिव अंग, खून संबंधित रोग।
– परमात्मा से संबंध :- सिविल सर्जन

विज़न :- दृश्य बनायें और अनुभव करें, मैं आत्मा शिवबाबा के सम्मुख बैठी हूँ। उनसे दिव्य सुनहरी चमकती हुई नारंगी रंग की किरणें, पवित्रता के गुण सहित, मेरे स्वादिष्टान चक्र में समा रही हैं। बाबा मुझे पवित्रता का ताज पहना रहे हैं। ध्यान से देखें, मैं संपूर्ण पवित्र हो चुकी हूँ...मुझ आत्मा में पवित्रता समाती जा रही है...जिससे चक्र से संबंधित अवयवों की बीमारियाँ ठीक हो चुकी हैं...मैं असीम पवित्रता का अनुभव कर रही हूँ।

7. मूलाधार चक्र
– ॲड्रनिल ग्रंथी और अस्थी(bone), मांस(muscle)
– रंग :- लाल
– गुण :- शक्ति
– बीमारी :- हड्डी व मांस से संबंधित, कैल्शियम कम होना, जोड़ों में दर्द, सूजन, स्नायू में दर्द, बवासिर, ऑर्थराइटिस, यूरिक एसिड बढ़ना, घुटना घिस जाना।
परमात्मा से संबंध :- सिविल सर्जन

विज़न :- दृश्य बनायें और अनुभव करें, मैं आत्मा शिवबाबा के सम्मुख बैठी हूँ, उनसे शक्ति की लाल रंग की किरणें मेरे मूलाधार चक्र में समा रही हैं। मैं आत्मा मास्टर सर्वशक्तिवान बनती जाती हूँ। जिससे चक्र से संबंधित प्रत्येक अवयव स्वस्थ हो रहे हैं। सारी बीमारियाँ ठीक हो चुकी हैं। मैं आत्मा शक्तियों का अनुभव कर रही हूँ।

- क्रमशः

दीव। टूरिज़्म इयर के अंतर्गत चार दिवसीय कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए म्युनिसिपल काउंसिल के चीफ ऑफिसर राकेश भाई। साथ हैं प्रमुख हितेश भाई, यू.पी. प्रमुख हरेश भाई, ब्र.कु. सुमन, ब्र.कु. वनीता, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. प्रशान्ति तथा अन्य।

मुम्बई-घाटकोपर। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा समाज में महिलाओं की गरिमा बढ़ाने हेतु आयोजित तीसरे 'सखी मिनीथॉन 2017' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए टी.वी. कलाकार शरद मल्होत्रा, ब्र.कु. नलिनी, ब्र.कु. निकुंज, खुरशीद मिस्त्री,ट्रस्टी,एन.के. डाबर कैंसर फाउण्डेशन, नखवा जी,चीफ मैनेजर,एस.बी.आई, ललित दर्मानी,डायरेक्टर,एल.डी. ग्रुप तथा अन्य।

मुम्बई-गोरई। सेवाकेन्द्र के दशाब्दी महोत्सव में केक काटते हुए राजस्थानी सिनेमा एवं टेलीविज़न की अभिनेत्री नीलू वाघेला, राजस्थानी एवं भोजपुरी फिल्म अभिनेता व निर्माता अरविंद कुमार, होटल व्यवसायी एवं बंट एसोसिएशन प्रमुख यर्मल हरीश शेट्टी, ए.पी.आई. पुलिस अधिकारी विशाल गायकवाड़, ब्र.कु. दिव्यप्रभा, ब्र.कु. कुंती, ब्र.कु. पारुल, ब्र.कु. कविता व अन्य।

सिल्लोड-औरंगाबाद(महा.)। 'सरल सुखद जीवन के लिए खुशी हर पल' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए डॉ. सचिन परब, डॉ. निलेश मिरकर, पुलिस इंस्पेक्टर के.के. पाटिल, ब्र.कु. छाया, ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. कमल, ब्र.कु. शान्ता तथा अन्य।

विशाखापट्टनम-आ.प्र.। गजुवाका में कुमारों की भट्ठी कराने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. मीरा,मलेशिया, ब्र.कु. शिवलीला, ब्र.कु. मणि, ब्र.कु. विद्या तथा सभी ब्रह्माकुमार।

दल्ली राजहरा-छ.ग.। शास. उच्च माध्य.विद्यालय दल्ली राजहरा के वार्षिकोत्सव में सांसद विक्रम उसेंडी,कांकेर लोकसभा,छ.ग. को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पूर्णिमा। साथ हैं लाल महेन्द्र सिंह टेकाम,पूर्व विधायक डौण्डी,लोहारा, राजेन्द्र राय,विधायक,गुण्डरदेही, प्राचार्य जी तथा अन्य।

खिलचीपुर-म.प्र.। विशाल नेत्र शिविर के अवसर पर आनंदपुर सेवा सदन के डॉ. बसंत शेरावत को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मधु।

राजकोट-मेहुल नगर(गुज.)। खेती को योग के वायब्रेशन्स देते हुए ब्रह्माकुमारीज़ ग्राम विकास प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. राजू। साथ हैं ब्र.कु. चेतना, ब्र.कु. अंजु, ब्र.कु. मोनिका तथा अन्य।

मलकापुर-महा.। कीर्तन द्वारा ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. वंदना। साथ हैं ब्र.कु. वर्षा, सरपंच सुरेश जाधव तथा अन्य।

उज्जैन-म.प्र.। जम्पिंग गोल्ड मेडलिस्ट कुमारी सौम्या अग्रवाल को सौगात देकर व माला पहनाकर सम्मानित करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. उषा। साथ हैं ब्र.कु. दत्तात्रय,माउण्ट आबू व अन्य।

गुस्से के बिना भी आसान है जीना

गतांक से आगे...

प्रश्न:- आपने बताया कि हमें सिर्फ अपने अंदर की आवाज़ को सुनने का प्रयास करना चाहिए कि वो क्या कहता है, लेकिन आजकल तो हम हर छोटी चीज़ भी, ऑफिस की, घर की समस्याओं का समाधान भी, हम दस लोगों से पूछ कर ही करते हैं।

उत्तर:- क्योंकि हम अपने अंदर की आवाज़ को नहीं सुनते हैं। हम उसकी बात को सुनें और जितना सुनते जायेंगे, ये हमें और भी विज़डम देता जायेगा। मान लो आप मुझे कोई अच्छी बात बता रहे हो, मैं सुनती ही नहीं, फिर आप दूसरी बार बतायें, मैं सुनती ही नहीं, चार बार बताओगे, पाँचवी बार आप मुझे बोलना ही बंद कर दोगे। क्योंकि मैंने ही अपने अंदर की जो अच्छी चीज़ थी उसे दबा दिया। और अगर मैं बार-बार आपकी बात सुनने लग जाऊं, तो आप सोचोगे कि चलो मेरे कहने के अनुसार ये कर तो रहा है। फिर हमारा जीवन बहुत ही साधारण बनकर रह जाता है।

प्रश्न:- जो बातें हमें निराश करती हैं, सारी फीलिंग्स जो कहीं न कहीं परेशानी का सबब बन जाती है। क्योंकि अब हमें ये समझ में आया कि खुशी, प्यार, शांति या संतोष जो है, वो भाव मेरे महसूस करने का है। और उससे जुड़े जितने भी बाकी भाव हैं चाहे वो गुस्सा है, चाहे वो स्ट्रेस है, चाहे वो ईर्ष्या है, चाहे वो डर है, वो एक नेगेटिव था जिसे हमें पॉज़ीटिव में बदलना है। हम वास्तव में क्यों नहीं समझ पाते हैं कि गुस्सा करना अच्छी बात नहीं है?

ब्र. कु. शिवानी

उत्तर:- चाहे कितनी भी बड़ी बात हो जाये लेकिन जैसे ही हम किसी और को गुस्से में देखते हैं तो हमें उसका गुस्सा कभी भी लॉजिकल रूप से सही नहीं लगता है। और फिर हम कहते भी हैं कि बिना बात के आप इतना गुस्सा क्यों कर रहे हैं, ये बात तो आप आराम से भी कर सकते हैं। हम यह कभी नहीं कहेंगे कि गुस्सा करना जायज़ है। हमारा यह अनुभव है कि हम गुस्से के बिना भी काम चला सकते हैं। यही शर्त हमारे साथ भी लागू होती है। किसी भी परिस्थिति में मेरा गुस्सा करना जायज़ नहीं कहा जायेगा। गुस्सा विविध रूपों में हमारे सामने आता है। गुस्से की स्थिति में यह आवश्यक नहीं है कि हम ज़ोर-ज़ोर से बोलें, अगर हम किसी बात को अंदर पकड़कर रख लेते हैं तो यह भी गुस्से का ही रूप है। अगर इस स्थिति में हम खुश रहना भी चाहें तो भी नहीं रह सकते हैं क्योंकि एंगर और हैप्पीनेस दोनों साथ-साथ नहीं रह सकते हैं। हमें अपने बिलीफ सिस्टम को चेक करना पड़ेगा कि 'हैप्पीनेस नैचुरल है या एंगर नैचुरल है'। दोनों में से हमें एक को चुनना पड़ेगा, क्योंकि दोनों की आपस में नहीं बनती। आपके अंदर वे दोनों इकट्ठे नहीं रह सकते हैं।

हमारी यह धारणा बनी हुई है कि 'गुस्से के बिना काम नहीं हो सकता है, इससे लोग हमारे नियंत्रण में रहते हैं, इससे कोई बिगड़ता नहीं है।' हमें मालूम है कि लोगों के अंदर प्रेरणा देने की शक्ति है। ये जो सारे हमने अपने-आपको बिलीव्स दिये हैं तो हम इसी में से एक एंगर को चुनते हैं। अब दोनों के बीच में अगर हमें एक को चुनना पड़ा, तो आज हमारे जीवन में प्रैक्टिकल में यह दिखाई देता है कि हमारा जीवन खुशी के बिना चल रहा है, लेकिन गुस्से के बिना नहीं चल रहा है।

प्रश्न:- हमने बहुत बार प्रयास किया कि गुस्से के बिना काम हो जाये लेकिन नहीं हुआ?

उत्तर:- काम नहीं हुआ तो हमने क्या किया, जब दोनों विकल्प हमारे सामने आये तो हमने किसको चुना? गुस्से को। अब अगर गुस्से को चूज़ किया है तो फिर उसके साथ ही जीवन जीना होगा। अब हम गुस्से के साथ जीते-जीते मांग किसकी कर रहे हैं कि 'मुझे खुशी चाहिए।'

हमने पहले भी कहा कि दोनों इकट्ठे नहीं रह सकते हैं। खुश रहना बहुत आसान है, हम खुश रह सकते हैं। जिस दिन आपने महसूस कर लिया कि गुस्से के बिना भी जीवन चल सकता है, तो उस दिन आपको खुशी क्रियेट नहीं करनी पड़ेगी। खुश तो हम ऑलरेडी हैं। हम अभी भी खुश हैं क्योंकि खुशी स्वाभाविक है। अगर ऐसा कुछ हो गया जिससे मैंने गुस्सा कर दिया तो हमारी खुशी गायब हो जाती है क्योंकि खुशी रिप्लेस हो गया गुस्से से। हमें कभी भी बैठकर खुशी क्रियेट नहीं करनी पड़ती है क्योंकि यह तो पहले से ही हमारे अंदर है लेकिन हमें एंगर को, पेन को, दुःख को, ईर्ष्या को क्रियेट करना पड़ता है। अब हमें यहां पर ये समझना है कि जिस तरह से हम इसे क्रियेट करते हैं उसी तरह से खुशी को भी क्रियेट कर सकते हैं। यदि हमने मन में सोच लिया कि हमें गुस्सा नहीं करना है, तो आपको खुशी क्रियेट नहीं करनी पड़ेगी। - क्रमशः

स्वास्थ्य

हींग के अनेक लाभ

हींग कोई फल या फूल नहीं होती, यह तो पेड़ के तने से निकली हुई गोंद होती है। इसका पेड़ 5 से 9 फीट ऊँचा होता है। इसके पत्ते 1 से 2 फीट लम्बे होते हैं।

हींग को हम रोज़ खाने का ज़ायका बढ़ाने के लिए सब्जियों में डालते हैं। इससे खाना तो टेस्टी बनता ही है साथ ही ये खाने को पचाता भी है। हींग (Asafoetida) का प्रयोग हम मुख्य तौर पर खाने में मसाले के रूप में ही करते है। लेकिन इसके सुस्वास्थ्य हेतु अनेक फायदे हैं...

- दाँत में कीड़ा लग जाने पर रात में सोते वक्त दांतों में हींग दबाकर सोएं। ऐसा करने से कीड़े अपने-आप निकल जाएंगे।
- कांटा चुभने पर उस स्थान पर हींग का घोल भर दीजिए। इससे पीड़ा भी समाप्त होगी और कांटा अपने आप निकल जाएगा।
- दाद, खाज, खुजली जैसे चर्म रोगों के लिए हींग बहुत फायदेमंद है। चर्म रोग होने पर हींग को पानी में घिसकर लगाने से फायदा होता है।
- बवासीर होने पर हींग का लेप लगाने से बवासीर में आराम मिलता है।
- कब्ज होने पर हींग के चूर्ण में थोड़ा सा मीठा सोडा मिलाकर रात में सोने से पहले खा लीजिए। इससे पेट साफ हो जाएगा।
- पेट में दर्द व ऐंठन होने पर अजवाइन और नमक के साथ हींग का सेवन करने से फायदा होता है।
- अगर किसी खुले ज़ख्म पर कीड़े पड़ गए हों तो उस जगह पर हींग का चूर्ण लगाने से कीड़े समाप्त हो जाते हैं।
- खाने से पहले घी में भुनी हुई हींग एवं अदरक का एक टुकड़ा मक्खन के साथ में लेने से भूख ज़्यादा लगती है।
- पीलिया होने पर हींग को गूलर के सूखे फलों के साथ खाना चाहिए। साथ ही हींग को पानी में घिसकर आंखों पर लगाने से फायदा होता है।
- कान में दर्द होने पर तिल के तेल में हींग को पकाकर उस तेल की

बूंदों को कान में डालने से कान का दर्द समाप्त हो जाता है।

- उल्टी आने पर हींग को पानी में पीसकर पेट पर लगाने से फायदा होता है।
- सिरदर्द होने पर हींग को गर्म करके उसका लेप लगाने से फायदा होता है।
- हींग बिच्छू, बर्र आदि के ज़हरीले प्रभाव और जलन को कम करने में काम आती है।
- यदि कभी आपको अचानक से पेट दर्द होने लगे तब थोड़ी सी हींग को पानी में घोलकर हल्का सा गर्म करके नाभि तथा इसके आसपास लेप लगायें, ऐसा करने से पेट दर्द में तुरंत ही आराम मिल जायेगा। नाभि के आसपास गोलाई में इस पानी का लेप करने से पेट दर्द, पेट फूलना व पेट का भारीपन दूर हो जाता है।
- दांत दर्द की समस्या होने पर हींग में थोड़ा सा कपूर मिलाकर दर्द वाली जगह पर लगाने से दांत में दर्द होना बंद हो जाता है।
- हींग की मदद से शरीर में ज़्यादा इन्सुलिन बनता है और ब्लड शुगर का स्तर नीचे गिरता है।
- हींग में कोउमारिन होता है जो खून को पतला करने में मदद करता है और इसे जमने से रोकता है। हींग बढ़े हुए ट्राइग्लीसेराइड और कोलेस्ट्रोल को कम करता है और उच्च रक्तचाप को भी घटाता है।
- छाछ में या भोजन के साथ हींग का सेवन करने से अजीर्ण वायु, हैजा, पेट दर्द, आफरा में आराम मिलता है।
- हींग में वह शक्ति होती है जो कर्क (कैंसर) रोग को बढ़ावा देने वाले सेल को पनपने से रोकता है।

- शेष पेज 6 पर...

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

हम सभी जो हैं, आज वो अपनी सोच का ही परिणाम हैं। आकर्षण के सिद्धान्त में हम ज़्यादातर तीन बातों या तीन स्तर पर सोचते हैं, पहला मांगना, दूसरा उस पर आँख मूंद कर विश्वास करना, तीसरा उसे प्राप्त करना। ये बातें जब हम करते हैं, तो वे चीज़ें हमें मिल ही जाती हैं। कहने का भाव है, जब हम उस चीज़ के बारे में, जिसे हम पाना चाहते हैं, उस समय यह महसूस करें कि वो हमें मिल चुकी है, और उसे हम एन्जॉय कर रहे हैं। अर्थात् उसे वैसा महसूस करें, जैसा हम वो चीज़ मिलने के बाद करते। बस यही महसूस करना उस चीज़ को हमारे पास लाने में मदद करता है। यही सिद्धान्त जीवन के हर पल, हर क्षण में कार्य कर रहा है। है क्या, सिर्फ मन के अंदर उठने वाले विचार। जैसे हम किसी बात में जब अच्छा महसूस करते हैं, उसे आप अपनी फ्रिक्वेंसी पर ले आते हैं।

आपको यह बात सोचकर ताज्जुब होगा कि जो हम चाहते हैं, या सोचते हैं, दोनों प्रक्रियाएँ अपने प्रकम्पनों द्वारा चीज़ों को अपनी तरफ आकर्षित करती हैं। ये बातें हमारे ज़हन में उतरेगी तब, जब हमारी जागृति की सीमा बहुत ऊपर होगी। रोज़ रोज़ एक ही बात...

जैसे कई बार सभी कहते हैं, मेरी हालत आजकल ठीक नहीं चल रही है, इसका अर्थ तो यही हुआ ना कि इसके पहले आपकी हालत ठीक थी, उस समय आपने अपने समय को बर्बाद किया। आज उसे फिर से सोचकर वही वाली ऊर्जा इस समय में भी डाल रहे हैं। आपकी हालत खराब नहीं है, खराब थी, अब उसे फिर से आप ठीक करना चाहते हैं, तो ये अच्छी सोच के आधार से होगा। हम सभी अतीत से या पास्ट से आकर्षित हैं, जब आप अपने मौजूदा हालात को देखते हैं, उससे अपने आपको जोड़ते हैं।

अभी सिर्फ अपने को उन विचारों से बिल्कुल भी पल्लवित ना होने दें। बस आप उन विचारों को ही अपने ऊपर लायें जो हमारे वर्तमान को पूरी तरह से बदल दें। बस सोचना ही तो है, इसमें कौन सा आपको टैक्स लग रहा है। लेकिन हमें, आपको थोड़ा वातावरण के विचारों से अपना बचाव करना है, जिससे आपके विचारों में ताकत आ जाए।

जब हम डर से, अवसाद से, आत्मग्लानि से, आलोचना से अपने आपको देखते हैं तो वही हमारे विचारों में भर जाता है। हमें करना है, प्यार, उमंग, खुशी, आभार व्यक्त करते हुए कार्य करना। आप देखें, आपकी ज़िन्दगी बदल जायेगी।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-15-2017

1		2		■	3		4	5	■
	■		■	■		■	6		7
	■	8		9		■		■	
■	10	■	■		■	■	■	11	
12		13	■	14		■	■		■
	■	15	16		■	17			■
	■	■		■	18		■	19	
■	20	21			■	22	23	■	■
24	■	25		■	■	26			27
28			■	29		■		■	

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. आशिक बन एक....बाबा को याद करना है (3)
2. ज़िन्दगी, ...के दाता श्वांसो के स्वामी (3)
3. किसी के आने की मंद पद चाप (3)
4.नज़र से....कींदा स्वामी (3)
5.आने वाले....की तुम तकदीर हो (2)
7. थप्पड़, हथेली से मारना (3)
9. खरहा, चौगड़ा (4)
10. पैर, पंख (2)
11. चालाक, धोखेबाज़ (4)
12. ....तुम्हारी ओ प्यारे भगवन, क्षणिक दर्शन (3)
13. कई बच्चों को माया....से पकड़ लेती है, नाशिका (2)
16. उलाहना, असंतोष, ग्लानि (4)
17. अति प्यारा, प्रिय (4)
21. जो राज़ को नहीं जानता वही....होता है (3)
23. धरना, लादना (3)
24. नौकर, गुलाम (2)
27. फायदा, नफा (2)

बायें से दायें

1. .... जगतजीत बनना है (4)
3. आजकल का, वर्तमान (4)
6. स्थिति, अवस्था (3)
8. चंचल, बड़ा....किशन कन्हैया (4)
11. पिता का छोटा भाई (2)
12. सोता, निर्झर (3)
14. माया के वशीभूत हो विकारों में....नहीं लगाना है (2)
15. खींच, आकर्षण (3)
17. बनावटी, दिखावटी (3)
18. ताकत, शक्ति (2)
19. संसार, जगत, दुनिया (2)
20. तेरी नज़रें....हैं किसी से नज़र मिलाना क्या (4)
22. दूल्हा, स्वामी, साजन (2)
25. तूने....गंवाई सोय के (2)
26. रक्षक, रक्षा करने वाला (4)
28. समुदाय, दल, समूह (3)
29. मैं....का बाबा मेरा (2)

- ब्र.कु. राजेश,शांतिवन

सारंगपुर-म.प्र.। नगर में जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ आचार्य विजय मेहता,पूर्व संपादक,दैनिक भास्कर के साथ ज्ञानचर्चा के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में ओ.पी. दूबे,पूर्व सी.एम.ओ., धर्मेन्द्र वर्मा,लैब इंचार्ज,पी.जी. कॉलेज, नरेन्द्र मकोडिया, ब्र.कु. भाग्यलक्ष्मी, ब्र.कु. नीरज तथा ब्र.कु. राजेन्द्र जैन।

राजनांदगांव-छ.ग.। साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस पर जैन समुदाय द्वारा आयोजित 'सर्वधर्म सम्मेलन' के पश्चात् चित्र में साध्वी श्री गुप्ती प्रभा जी, कुसुमलता जी, मौलिकयशा जी, ब्र.कु. पुष्पा तथा ब्र.कु. प्रभा।

इंदौर-सुदामा नगर से.-डी.। नवनिर्मित 'प्रभु उपहार भवन' का उद्घाटन करते हुए क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला, युनीक हॉस्पिटल के संचालक डॉ. प्रमोद निमा, ब्र.कु. शशि, ब्र.कु. दामिनी तथा अन्य।

अमरावती-महा.। गणेश कॉलोनी उपसेवाकेन्द्र का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू, ब्र.कु. सीता,जिला संचालिका, ब्र.कु. इंद्रा, नवनीत कौर राणा तथा अन्य।

रेणापुर-अंबाजोगाई(महा.)। सेवाकेन्द्र के नौवें वर्धापन दिवस पर 'बेटी बचाओ सशक्त बनाओ' अभियान के अंतर्गत् आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं मंजुषा लटपटे,तहसीलदार, वैशाली माने,संचालिका,शुगर फैक्ट्री, राजेश कसोडे,एकात्मिक बाल विकास प्रकल्प अधिकारी, ब्र.कु. महानंदा, ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. मंजू तथा अन्य।

मछलीपट्टनम-आ.प्र.। 'शक्ति सम्पन्न तपस्या भट्ठी' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए सांसद के. नारायण, म्युनिसिपल मेयर बाबा प्रसाद जी, ब्र.कु. आत्मप्रकाश,माउण्ट आबू, ब्र.कु. सविता, ब्र.कु. मूर्ति, ब्र.कु. सुधाकर तथा अन्य।

आदिपुर-गुज.। 'आओ बनायें स्वच्छ-स्वस्थ और श्रेष्ठ समाज' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए अग्रवाल समाज के प्रमुख देवेन्द्र भाई अग्रवाल, आर्य समाज के प्रमुख वाचोपाय जी, कच्छ अहिर समाज के प्रमुख बाबूभाई, मुस्लिम कच्छ समाज के प्रमुख जुमाभाई, ब्र.कु. गोदावरी, ब्र.कु. अमीरचंद, ब्र.कु. ओंकार तथा ब्र.कु. भारती।

येवला-महा.। सेवाकेन्द्र में आने पर ज्ञानचर्चा के पश्चात् समूह चित्र में नगरपरिषद के नगराध्यक्ष बण्डू क्षीरसागर, नगरसेविका छाया क्षीरसागर, नगरसेविका सरोजिनी वखारे, नगरसेविका पुष्पा गायकवाड़, नगरसेविका छाया देसाई, ब्र.कु. बहनें तथा अन्य।

मैनपुर-छ.ग.। तहसीलदार एफ.आर. ठाकुर को ओमशान्ति मीडिया द्वारा हो रही वैश्विक सेवाओं की जानकारी देने के पश्चात् उन्हें ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. सुमन। साथ हैं ब्र.कु. प्रभा तथा अन्य।

जबलपुर-नेपियर टाउन। आदिवासी कन्या छात्रावास की कन्याओं को प्रेरणादयी उद्बोधन देते हुए सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. भावना। साथ हैं अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की केन्द्र प्रभारी सुमन यादव।

वालिया-भरूच(गुज.)। युवा दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ तथा विश्व कल्याणकारी महाज्योति ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'खेलोत्सव' कार्यक्रम में ट्रॉफी प्राप्त करते हुए विजेता स्कूल की आचार्या श्रीमती कनुबहन एवं शिक्षिकाएँ। साथ हैं ब्र.कु. हेमा।

रुपांतरण हेतु क्या...?

- ब्र.कु. मोनिका,शांतिवन

कुरुक्षेत्र के युद्ध के बाद पाण्डव गौत्रमर्दन के पाप का प्रायश्चित करने के लिए तीर्थ करने का विचार करने लगे। उन्होंने श्रीकृष्ण महाराज के पास तीर्थाटन के लिए जाने की आज्ञा मांगी और श्रीकृष्ण से भी साथ में आने की प्रार्थना की। तब श्रीकृष्ण ने कहा: 'मेरी ये तुम्बड़ी (कड़वा कद्दू) को मेरी जगह तीर्थाटन में नहलाना। मैं अभी आपके साथ चलने में असमर्थ हूँ।'

पाण्डव जहाँ-जहाँ तीर्थ स्थान पर गये, वहाँ-वहाँ इस तुम्बड़ी को भी अपने साथ नहलाते रहे। आखिर में द्वारिका में आकर इस तुम्बड़ी को श्रीकृष्ण को दिया। श्रीकृष्ण ने सभा के समक्ष इस तुम्बड़ी के टुकड़े कर उसका चूर्ण बनाया और सभाजनों को एक-एक चुटकी देते हुए कहा: 'यह तुम्बड़ी अड़सठ तीर्थ करके आयी है। इसलिए इसका स्वाद लेना चाहिए।'

> बाह्य तीर्थों की मात्र यात्रा करने से भीतर की अंतरात्मा शुद्ध नहीं होती। शरीर के बाह्य स्नान व बाह्य प्रदर्शन से कुछ भी नहीं मिलता। उसके द्वारा मन की पवित्रता सधनी चाहिए। 'मन चंगा तो कठौती में गंगा'।

सभाजनों ने यह चूर्ण अपने मुँह में डाला तो सबको कड़वा लगा। सबकी मुख मुद्रा बदल गई और हँसते-हँसते श्रीकृष्ण ने कहा: 'अब इस चूर्ण को थूक दो। मैंने तो पाण्डवों को समझाने के लिए युक्ति रची थी। ऐसे ही बाह्य तीर्थों की सिर्फ यात्रा करने से भीतर की अंतरात्मा शुद्ध होती नहीं। बाह्य स्नान या बाह्य प्रदर्शन से कुछ भी होता नहीं। उसके द्वारा मन की पवित्रता सधनी चाहिए।' 'मन चंगा तो कठौती में गंगा'।

कर्मकांड, पूजा, आराधना जैसी बाह्य क्रियाओं की थोड़ी महिमा है ज़रूर। उसके कारण साधक एक भाव, भावना और वातावरण में जीते हैं और उसके परिणाम स्वरूप उनमें भीतर जाने की इच्छा जागृत होती है, लेकिन अपना दुर्भाग्य, बाह्य की महिमा इतनी कर दी है कि व्यक्ति के मस्तक पर तिलक देखें तो उसे परमधामिक मान लेते हैं। गले में रूद्राक्ष की माला झूलती दिखाई देती हो, तो हम उसे भूल से भी योगी स्वरूप मान लेते हैं।

भगवा वस्त्र पहन मंदिर में पूजा-अर्चना करते देख हम उसे धार्मिक मान लेते हैं। परंतु ये सब बाह्य रंग-रोगन है, और इन बाह्य रंग-रोगन में व्यक्ति इतना रच-बस जाता है, कि बहुत बार भीतर की ओर पहला कदम भी आगे नहीं बढ़ा पाता।

आपने ऐसे व्यक्तियों को देखा होगा जो कर्मकांड द्वारा बड़ी-बड़ी प्रसिद्धियाँ हासिल कर लेता है, लेकिन प्रसिद्धि मुख्य बन जाती और कर्मकांड द्वारा भीतर में जाने की कोई वृत्ति जागती ही नहीं। उपवास करने वाले खुद उपवास की महिमा करते रहते हैं, लेकिन ये उपवास का सच्चा अर्थ भी नहीं जानते। 'उपवास' 'उप' यानि आत्मा और 'वास' यानि बसना। अर्थात् आत्मा की सही समझ की स्थिति में स्थित होना और अपने मन को अपने उस सत् चित् आनंद के भाव से अभिभूत करना। उससे ही बाह्य प्रवृत्तियों से मुक्त होकर परिवर्तन होना। जो उपवास करने मात्र की ही बाह्य प्रवृत्ति करता रहे, तो ये उपवास सिर्फ आडम्बर बनकर ही रह जाता है। ऐसी प्रसिद्धि में रचे-बसे आज के युग में बहुत से मनुष्य धर्म, आराधना का मर्म ही भूल जाते हैं, और वे सिर्फ उसके प्रति रचे-बसे और लगे ही रहते हैं। इस संदर्भ में महावीर का एक वाक्य याद रखना चाहिए 'तप अप्रसिद्ध होना चाहिए'।

मूल बात विचार करें तो व्यक्ति अपने आस-पास की बाह्य क्रिया, बाह्य दिखावे, बाह्य आडम्बर, बाह्य घेराव की इतनी बड़ी गहराई के भंवर से घिरा रहता है जो बाह्य क्रिया के किले को भेदकर अंतर तक पहुँच ही नहीं पाता।

आज के परिदृश्य में हम देखें तो कोई व्यापारी के पास जायें तो वो सतत् व्यापार की बात करते हुए दिखाई देगा। कोई राजनेताओं के पास जायें तो वे राजकीय दाव-पेंच करते दिखाई देंगे। यही उनके जीवन का सर्वस्व बना रहता है। क्योंकि उससे वो बाह्य जगत में ही जीने लग पड़ता है।

भीतर जाने के लिए या अपार खुश रहने के लिए हमें अपने अदर झांक कर देखना होगा। हमें जब कुदरत ने इस ज़मीन पर भेजा तो सर्वस्व व सर्वश्रेष्ठ सबकुछ दिया। सिर्फ उसे देखना है और उसे समझपूर्वक अपने व दूसरों के कल्याण के लिए प्रयोग करना है, और अपार खुशी में रहते हुए अपनी जीवन यात्रा का लुत्फ उठाना है।

अपार खुशी में रहने के लिए :-

1. किसी के द्वारा बजाए गए रोल को न देख, रोल करने वालों से सदा प्यार बनाए रखना है।
2. अपने सुखी व खुशहाल जीवन से सबको खुश रहने का पैगाम देना है।
3. कुदरत द्वारा मिले इस स्वस्थ व श्रेष्ठ शरीर रूपी साधन से जीवन यात्रा को सफल बनाना है।
4. रोज़ ईश्वर द्वारा प्रदत्त सर्वशक्तियाँ व सर्व सुख के साधनों के लिये उसका दिल से धन्यवाद करना है।
5. अपने भीतरी शक्तियों पर विश्वास के लिए सुबह-सुबह अपने लिए कम से कम आधा घण्टा शांत बैठकर अपनी योग्यता व अपनी शक्तियों के प्रति देखना है व समझना है और अपने विश्वास को प्रगाढ़ करना है।

हींग के अनेक लाभ... -पेज 4 का शेष

► हींग के चूर्ण में थोड़ा सा नमक मिलाकर पानी के साथ लेने से लो ब्लड प्रेशर में आराम मिलता है।

► बच्चों के पेट में कीड़े होने पर ज़रा सी हींग एक चम्मच पानी में घोलकर रूई के फाहे को उसमें डुबोकर बच्चे के पॉटी होल में रख दें इसके बाद जब बच्चा पॉटी करेगा तो सारे कीड़े मर कर पॉटी के साथ निकल जाएंगे। यदि बड़ो के पेट में भी कीड़े हो जाएं तो ये उपाय वो भी अपना सकते हैं।

► भुनी हुई हींग को रूई के फाहे में लपेटकर दाढ़ पर रखने से राहत मिलती है।

► एसिडिटी की समस्या होने पर थोड़ी सी हींग को गुड़ में मिलाकर गरम पानी के साथ खा लें, इससे गैस से होने वाले दर्द में आराम मिल जायेगा।

► पसलियों में दर्द होने पर हींग रामबाण की तरह से काम करता है। ऐसे में हींग को गरम पानी में घोलकर लेप लगाएं, सूखने पर प्रक्रिया दोहराएं। आराम मिलेगा।

► माइग्रेन और सिरदर्द में आधा कप पानी में हींग मिलाकर पीने से आराम मिलता है।

► अफीम का नशा उतारने के लिए थोड़ी सी हींग को पानी में घोलकर पिला दें, इससे नशा जल्दी उतर जाता है।

► यदि घाव नासूर हो गया है और सड़ने लगता है तो हींग को नीम के पत्तों के साथ पीसकर घाव पर लगाने से कुछ ही दिनों में आराम आ जाता है।

► जुकाम होने पर बहुत से लोगों की नाक बंद हो जाती है जिससे साँस लेने में काफी तकलीफ हो जाती है, हींग सूंघने से जुकाम से बंद हुई नाक खुल जाती है। थोड़ी सी हींग पीसकर पानी में घोल लें और शीशी में भर लें। इसे सूंघने से सर्दी-जुकाम, सिर का भारीपन व दर्द में आराम मिलता है। पीठ, गले और सीने पर पानी का लेप करने से खाँसी, कफ, निमोनिया और श्वास कष्ट में आराम मिलता है।

► अगर कफ जकड़ गया है या फिर सूखी खाँसी हो रही है, इसके लिए आधा चम्मच अदरक के रस में आधा चम्मच हींग और एक चम्मच शहद मिलाएं। फिर दिन में तीन बार इसका सेवन करें। इससे गले की खराश में भी आराम मिलेगा। साथ ही हींग के तेल की दो बूंदें गर्म पानी में डालकर भाप लेने से भी आराम मिलेगा। हींग के तेल से सीने, गर्दन और कमर पर मालिश करने से भी ठंड से शरीर की जकड़न या दर्द में राहत होगी।

ईमानदारी सर्वोत्तम नीति

- ब्र.कु. निकुंज,मुम्बई

समग्र विश्व में सभी को छोटे बच्चे प्यारे क्यों लगते हैं ? क्योंकि जो भी उनके मन में होता है, वह तुरंत बोल देते हैं, और उनकी यही उल्लेखनीय गुणवत्ता सबका मन मोह लेती हैं। उनका वह पवित्र-निश्छल भाव हम सभी के दिल को छू जाता है। वास्तव में देखा जाये तो सत्यता या ईमानदारी, यह हमारे गहरे गुणों में से एक महत्वपूर्ण गुण है जिसकी खोज में हम में से कइयों ने अपना जीवन बिता दिया पर खोज के अंत में पाया यही कि सत्यता तो हम सबकी भीतरी गहराई में ही विराजमान है। अब प्रश्न यह उठता है कि हमने हमारी इस बहुमूल्य गुणवत्ता को जीवन यात्रा के किस मोड़ पर और कैसे खो दिया? क्योंकि यदि हम जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए हमारे आत्म सम्मान और अखंडता को बनाये रखना चाहते हैं तो उसके लिए हमें सर्वप्रथम खुद के साथ ईमानदार होना पड़ेगा, अन्यथा हम अपना सर ऊँचा करके समाज के अन्दर कभी चल नहीं पाएंगे। ईमानदारी मुख्य रूप से अपनी ताकत या कमज़ोरियों को स्वीकार करने और फिर अपने भीतर भरोसा और विश्वास निर्माण करने की सबसे श्रेष्ठ गुणवत्ता है। इतिहास इस बात का गवाह है कि ईमानदारी के इस गुण की मज़बूत नीव के ऊपर बड़े बड़े राज्यों के संबंधों की इमारतें सदियों से खड़ी हैं। जब हम दूसरों के साथ ईमानदार रहते हैं तब हम उनका विश्वास संपादन करने में सफल होते हैं। यही विश्वास फिर हमारे जीवन का सबसे बड़ा संभावित इनाम बन जाता है, क्योंकि लोगों के विश्वास का पात्र बनने के पश्चात् सभी हमारी अधिक प्रशंसा और सरहाना करने लगते हैं और हम अपने जीवन में उम्मीद से ज़्यादा सम्मान व स्नेह प्राप्त करने के हकदार बन जाते हैं। यह सबकुछ केवल एक ईमानदारी के गुण के कारण ही हमें प्राप्त होता है तो क्यों न हम इस जादुई गुण को अपने अन्दर धारण करके अपने जीवन में जादुई परिवर्तन लायें। कम से कम एक दिन तो ईमानदार बनकर देखें...! आप देखें कि आपकी मनोस्थिति क्या रही? आपके हृदय में कैसे भाव जागे? आपकी फीलिंग कैसी रही? अगर आप अच्छा महसूस करते हो, तो इसी प्रयोग को रोज़-रोज़ दोहरायें। जिससे आपकी ईमानदारी की पराकाष्ठा होगी और वही आपकी ताकत भी।

ईमानदारी मुख्य रूप से अपनी ताकत या कमज़ोरियों को स्वीकार करने और फिर अपने भीतर भरोसा और विश्वास निर्माण करने की सबसे श्रेष्ठ गुणवत्ता है। इतिहास इस बात का गवाह है कि ईमानदारी के इस गुण की मज़बूत नीव के ऊपर बड़े बड़े राज्यों के संबंधों की इमारतें सदियों से खडी हैं।

सहनशीलता

सफलता के पैमाने में सहनशीलता होना आवश्यक है। बिना सहनशीलता के सफल होना असंभव है। कहते हैं, सहनशीलता सर्व गुणों का राजा है, और जहाँ राजा है, वहाँ सर्व गुण उसके साथ समाहित हैं। अगर हम सफल होना चाहते हैं तो सहनशीलता के साथ-साथ सरलता अवश्य होनी ही चाहिए। क्योंकि जब हम सफलता अर्जित करने के उद्देश्य से आगे बढ़ते हैं, तो अपने भीतर और बाह्य दोनों ओर से संकल्प और विचार हमें झकझोरते हैं। ऐसे में सत्य के प्रति सहनशील होकर रहना एक शील पुरुष का ही काम है। सहनशीलता और सफलता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सफलता के लिए सहनशीलता का कितना महत्व है, ये हम जानें भी और समझें भी। सफलतामूर्त बनने के लिए मुख्य गुण चाहिए सहनशीलता का। सहनशीलता और सरलता कोई भी कार्य को सफल बना देगी। जैसे कोई धैर्यता वाला मनुष्य सोच समझकर कार्य करता है तो सफलता प्राप्त होती है। वैसे ही सहनशील जो होते हैं वह अपनी ही सहनशीलता की शक्ति से, कैसा भी कठोर संस्कार वाला हो वा कैसा भी कठिन कार्य हो, उनको शीतल बना देते हैं वा सहज कर देते हैं। सहनशीलता का गुण जिसमें होगा वह गम्भीर भी ज़रूर होगा। जो गम्भीर होता है, वह गहराई में जाने वाला होता है और जो गहराई में जाने वाला होता है वह किसी भी कार्य में कभी घबरायेगा नहीं, गहराई में जाकर सफलता प्राप्त करेगा। सहनशीलता वाले बाहरमुखता के वायब्रेशन को ही नहीं, लेकिन मन के संकल्प भी जो उत्पन्न होते हैं उन संकल्पों की उत्पत्ति को देखकर भी घबरायेंगे नहीं। अपनी सहनशीलता से सामना करेंगे, और सहनशीलता के गुण वाले की सूरत से क्या दिखाई देगा? जिसमें सहनशीलता का गुण होता है वह सूरत से सदैव सन्तुष्ट दिखाई देगा। उनके नैन-चैन कभी भी असन्तुष्टता के नहीं दिखाई देंगे। तो जो स्वयं सन्तुष्टमूर्त रहते हैं वह औरों को भी सन्तुष्ट बना देंगे। सहनशीलता एक मुख्य धारणा है। जितनी सहनशीलता अपने में देखेंगे उतना समझो स्वयं से भी सन्तुष्ट हैं, दूसरे भी सन्तुष्ट हैं। सन्तुष्ट होना माना सफलता पाना। जो कोई भी बात को सहन कर लेता है तो सहन करना अर्थात् उसकी गहराई में जाना। जैसे सागर के तले में जाते हैं तो रत्न लेकर आते हैं। ऐसे ही जो सहनशील होते हैं वह गहराई में जाते हैं, जिस गहराई से बहुत शक्तियों की प्राप्ति होती है। सहनशील ही मनन-शक्ति को प्राप्त कर सकते हैं। सहनशील जो होता है वह अन्दर ही अन्दर अपने मनन में तत्पर रहता है और जो मनन में तत्पर रहता है वही मग्न रहता है। तो सहनशीलता बहुत आवश्यक है। उनका चेहरा ही गुणमूर्त बन जायेगा। सहनशीलता की धारणा पर इतना अटेन्शन रखना है। सहनशील ही ड्रामा की ढ़ाल पर ठहर सकता है। सहनशीलता नहीं तो ड्रामा की ढ़ाल को पकड़ना भी मुश्किल है। सहनशीलता वाला ही साक्षी बन सकता है और ड्रामा की ढ़ाल को पकड़ सकता है। इतना अटेन्शन इस पर है? सदैव कोई-न-कोई गुण सामने देख उनकी गहराई में जाना है। जितना-जितना गहराई में जायेंगे उतना ही गुण की वैल्यू का पता पड़ेगा और जितना जिस चीज़ की वैल्यू का मालूम होता है उतना ही हर गुण को ग्रहण करना वा वर्णन करना सहज है। लेकिन एक-एक गुण की गहराई कितनी है - यह जो जानते हैं वही इतने वैल्युएबल बनते हैं, उनका ही गायन सर्व गुण सम्पन्न का होता है, अर्थात् गुणों के आधार पर ही इतनी वैल्यू है। तो जिन गुणों के आधार से इतने वैल्युएबल बने, उस एक-एक गुण की कितनी वैल्यू होगी! ऐसी गहराई में जाना है और जितना स्वयं को वैल्यू का पता मालूम होगा उतना ही औरों को भी उस वैल्यू से सुनायेंगे।

- ब्र.कु. विश्वनाथ

रतलाम-शास्त्रीनगर। द इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ लायन्स क्लब द्वारा आयोजित 'महिला सशक्तिकरण' कार्यक्रम में मंच पर उपस्थित हैं विशिष्ट अतिथि के रूप में ब्र.कु. सविता, इंटरनेशनल पीस स्पीकर मनीषा गौर, लायन्स एम.जे.एफ. परविंदर भाटिया तथा अन्य लायन्स सदस्य।

अमरावती-महा.। बडनेरा रोड पर प्रवेश द्वार का उद्घाटन करते हुए विधायक रविभाऊ राणा। साथ हैं जिला संचालिका ब्र.कु. सीता, डॉ. अजय डफळे, डॉ. वलसलन नायर, ब्र.कु. शिरभाते तथा अन्य।

चेन्नई। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा कुचलम बाल कल्याण महल में आयोजित 'गुड बाय डायबिटीज़' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. डॉ. श्रीमंत साहू,डायबिटोलॉजिस्ट एंड होलिस्टिक केयर फिज़ीशियन। मंचासीन हैं डॉ. के. सेनगुट्टुवन, डॉ. के राजेन्द्रन, डॉ. ब्रिजेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, डॉ. वी.चोकलिंगम, ब्र.कु. बीना तथा ब्र.कु. कलावती।

मुम्बई-बोरीवली। स्नेह मिलन कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. दत्तात्रय,माउण्ट आबू। साथ हैं बोरीवली सबज़ोन डायरेक्टर ब्र.कु. दिव्यप्रभा तथा ब्र.कु. परमेश,माउण्ट आबू।

आणंद-गुज.। प्रजापिता ब्रह्माबाबा की पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में मंचासीन हैं स्वामी मोरारीदास जी महाराज, संतराम मंदिर करमसद, डॉ. प्रो. पीनाकीन याज्ञिक, ब्र.कु. कुसुम, ब्र.कु. गीता तथा ब्र.कु. राजू।

बड़ौदा-मंगलवाड़ी। गुजरात राज्य के खेल महाकुम्भ में लॉन टेनिस एबव-40 महिला सिंगल ईवेंट में 6-2 से जीत प्राप्त कर तृतीय स्थान प्राप्त करने पर ब्रॉन्ज मेडल तथा सर्टिफिकेट से ब्र.कु. वंदना को गुजरात राज्य की ओर से सम्मानित करने के पश्चात् आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र.कु. राज दीदी, ब्र.कु. नरेन्द्र तथा ब्र.कु. वंदना।

जावरा-म.प्र.। गीता ज्ञान प्रवचन कर्ता साध्वी सुश्री सरस्वती देवी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सावित्री। साथ हैं ब्र.कु. शिवकन्या।

मलकापुर-महा.। 'वाहन सुरक्षितता मोहिम अभियान' का दीप प्रज्वलित कर उद्‌घाटन करते हुए पी.एस.आई. राऊळ पाटील, डेपो मैनेजर अभिजीत पाटील, ब्र.कु. वंदना, ब्र.कु. वर्षा तथा अन्य।

नवेगांव-बांध(महा.)। भागवतकार ज्ञानेश्वरी बहन तथा दिनेश दास महाराज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राधा तथा ब्र.कु. चन्द्रकला।

पाचोरा-महा.। नगराध्यक्ष छोटूभाई गोहिल को गुलदस्ता शॉल व श्रीफल भेंट कर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. मीरा। साथ हैं ब्र.कु. नंदा।

पालघर-महा.। एस.टी. डेपो में 'व्यसनमुक्त तनावमुक्त जीवन जीने की कला' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् मैनेजर वन्नेला जी साहब, आर.पी. पाटिल साहब, नरोत्तम साहब तथा अन्य ऑफिसर्स को ईश्वरीय सौगात एवं ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. दत्तात्रय,माउण्ट आबू तथा ब्र.कु. बकुल।

पुणे-सदाशिव पेठ। प्रजापिता ब्रह्माबाबा की पुण्य स्मृति दिवस पर ब्रह्मा बाबा के जीवन चरित्र एवं अनेकानेक विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए ब्र.कु. लता। साथ हैं डॉ. महिपाल पटवर्धन तथा बिल्डिंग कंस्ट्रक्टर एंड डेवलपर अरुण देवस्थले।

कहाँ जाना है हमें, ये हमारे निर्णय पर निर्भर

गतांक से आगे...

पूर्ण खिला हुआ चंद्रमा पूर्णमासी में कितने दिन रहता है? एक घड़ी, दूसरी घड़ी से फिर उसकी अमावस की ओर यात्रा चलने लगती है। अमावस में कितना समय रहता है। एक घड़ी, फिर पुन: उसकी पूर्णमासी की ओर यात्रा होने लगती है। ठीक इसी प्रकार आत्माओं की भी सम्पूर्ण अवस्था सतयुग में होती है। सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरूषोत्तम, श्रेष्ठ गति को प्राप्त कर लेते हैं। लेकिन उस गति के बाद धीरे..धीरे...उसकी भी अमावस की तरफ यात्रा प्रारंभ होती है। अर्थात् कलियुग या मृत्युलोक तक आते हैं, लेकिन फिर वहाँ पुरुषार्थ करते हुए पुन: उस अमरलोक की ओर जाते हैं। तो परिवर्तन नित्य है। परिवर्तन हमें दिखाई नहीं देता है। ध्यान देकर देखो, तो परिवर्तन नज़र आता है। हर घड़ी हर व्यक्ति के अंदर परिवर्तन की प्रक्रिया चल रही है। इस शरीर में भी परिवर्तन हो रहा है। मनोवृत्ति में परिवर्तन हो रहा है। भावनाओं में परिवर्तन हो रहा है। परिवर्तन कहाँ नहीं हो रहा है! इसलिए कहा कि जब वो पुण्य क्षीण होने लगते हैं तो पुन: मृत्युलोक में आ जाते हैं। इस प्रकार जन्म-मृत्यु के चक्र में आते-जाते रहते हैं। कुदरत के नियम के अनुसार उसको चलना ही है। उसमें भी जो अनन्य भाव से जितना मेरे दिव्य स्वरूप का ध्यान करते हुए निरंतर मुझे याद करते हैं, नि:स्वार्थ भाव से, उसमें कोई स्वार्थ नहीं, उनकी हर आवश्यकता को मैं पूरा करता हूँ। देखो ये भगवान का वायदा है।

जैसे एक बच्चे की आवश्यकता वो खुद नहीं जानता है, लेकिन माँ-बाप को पता है कि बच्चे की आवश्यकता क्या है? उस अनुसार उसको वो चीज़ देते जाते हैं। उसके लिए लाते जाते हैं। उसको मांगने की भी ज़रूरत नहीं पड़ती है। बच्चा इस क्लास में आया तो उसको इतनी चीज़ें लगेंगी। अपने आप माँ-बाप बाज़ार में जाकर के वो चीजें ले आते हैं। बच्चा निश्चिंत है। इसी प्रकार आत्मायें भी जितना अनन्य भाव से, हृदय से उस परमात्मा के दिव्य स्वरूप को याद करते जाते हैं, उनकी आवश्यकताओं को परमात्मा पूरा करते हैं। उनकी रक्षा भी करते है। कितना सुंदर भगवान का वायदा है कि रक्षा भी मैं करता हूँ। इसीलिए तो परमात्मा को परम रक्षक कहा गया है और सर्वशक्तिवान भी कहते हैं। क्योंकि वे सर्व आवश्यकताओं को पूर्ण भी करते हैं। हरेक व्यक्ति को ये अनुभव होगा कि कैसे भगवान किस समय पर उनकी रक्षा करते हैं। उसकी महसूसता अवश्य होगी। कभी न कभी जीवन में इसका अनुभव किया होगा। उस समय ये महसूस भी हुआ होगा कि ये कोई मनुष्य ने रक्षा नहीं की, लेकिन ये परमात्मा ने आकर हमारी रक्षा की। परंतु जो मेरे वास्तविक स्वरूप को ज्ञान के आधार से नहीं जानते हैं अर्थात् परमात्मा को कोई इन चरम चक्षुओं से देख नहीं सकते। ज्ञान के दिव्य चक्षुओं से उनको समझ सकते हैं। इसलिए भगवान कहते हैं कि जो मेरे वास्तविक स्वरूप को ज्ञान के आधार से नहीं जानते हैं, अज्ञानता पूर्वक मुझे देवताओं के रूप में याद करते हैं, श्रद्धा पूर्वक उनको पूजते हैं, वह देवताओं के बीच जन्म लेते हैं। जो पित्रों को पूजते हैं वो पित्रों के पास जाते हैं। जो भूत-प्रेत की उपासना करते है, वह उन्हीं के बीच में जाते हैं। आजकल की दुनिया में अंधश्रद्धा वश कोई हमें कहाँ जाने की प्रेरणा देता है, तो कोई हमें कहाँ जाने की प्रेरणा देता है। क्योंकि भगवान का सत्य परिचय, उसके दिव्य स्वरूप का ज्ञान तो किसी के पास नहीं है। इसलिए कोई देवताओं को पूजने के लिए कहते हैं, तो कोई पित्रों को पूजने के लिए कहते हैं और कोई तंत्र-मंत्र-जंत्र के आधार पर भूत-प्रेत की पूजा भी करते हैं। उनकी गति को भगवान ने स्पष्ट किया कि जो देवताओं को पूजते हैं वो उसी घराने में जाते हैं। जो पित्रों को पूजते हैं, वो उन्हीं के पास जाते हैं। जो भूत-प्रेत की उपासना करते हैं, वह उन्हीं के पास उन्हीं के बीच में जाते हैं। अब हमें कहाँ जाना है वो हमें फाइनल करना होगा।

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

- क्रमश:

स्व अस्तित्व की पराकाष्ठा को... - पेज 2 का शेष

तप अपने को सताना नहीं है, अपनी जीवन ऊर्जा को उसकी पराकाष्ठा पर प्रकट होने देना है। जिसकी जीवन ऊर्जा पराकाष्ठा पर प्रकट होगी, निश्चित ही उसका अंतिम परिणाम सृजन होगा, कला होगी, क्योंकि ऊर्जा तुम्हें सृष्टा बनायेगी। तुम भीतर रचो, कि मूर्ति रचो, कि चित्र बनाओ, कि तुम जो कुछ भी करोगे, उस सब में एक सोष्ठव होगा, उस सब में एक संस्कृति होगी। तुम मिट्टी छुओगे तो सोना हो जायेगी। और मिट्टी को छूकर सोना बना देने का नाम ही कला है।

जब तक स्वयं के सत्य को नहीं जाना, शील को नहीं पहचाना, अपने भीतर के केन्द्र को अनुभव नहीं किया, तब तक सब झूठ है; उसके साथ ही सब सच हो जाता है। एक को जान लो तुम, स्वयं को, तो तुम्हारे जीवन में फूल ही फूल खिल जाते हैं। इतने फूल खिल जाते हैं कि तुमने जिसकी कभी कल्पना भी नहीं की थी, इतने गीत कि तुमने कभी सोचा भी न था, कि तुम्हारे भाग्य में होंगे। इतना आनंद, इतना नृत्य, इतनी ऊर्जा कि नृत्य तो फूटेगा ही, आनंद तो आयेगा ही, ऊर्जा तो अपने आप नाचती है। ऊर्जा बिना नाचे नहीं रह सकती। झरने फूट पड़ेंगे।

और तभी जप, या जो बैठकर राम नाम की चदरिया ओढ़े हुए और माला हाथ में लिये जप कर रहे हैं मुर्दो की भांति, इनके जप का कोई मूल्य नहीं है, लेकिन जप का अर्थ होता है; जब तुम्हारे जीवन में आनंद की पुलक आई, लहर दौड़ी और तुम्हारे भीतर अनुग्रह का भाव उठा। परमात्मा को- परमात्मा शब्द को भी बीच में ना लाओ तो भी चलेगा - अस्तित्व को जब धन्यवाद देने के लिए तुम झुके, उस झुकने का नाम ही जप है। फिर वह मौन भी हो सकता है, मुखर भी हो सकता है। उस स्वानुभूति के पहले जो ज्ञान है, कचड़ा है, किताबी है, शास्त्रीय है, उस स्वानुभव के बाद ही ज्ञान है। ज्ञान एक ही है: अपने को जानना।

अत: तप का सही अर्थों में बोध होना ही अपने आप में जाग जाना है। ना कि अपने को सताना, अपने को कष्ट देना।

ख्यालों के आईने में...

ज़िन्दगी बहुत कुछ सिखाती है,
कभी हँसाती है तो कभी रुलाती है; पर जो हर हाल में खुश रहते हैं,
ज़िन्दगी उनके आगे सर झुकाती है।

ज़रूरत के मुताबिक ज़िन्दगी जिओ - ख्वाहिशों के मुताबिक नहीं।
क्योंकि ज़रूरत तो फकीरों की भी पूरी हो जाती है,
और ख्वाहिशें बादशाहों की भी अधूरी रह जाती हैं।

कथा सरिता

कौन है सबसे महत्वपूर्ण

एक बार संकल्प, बल व रचनात्मकता में इस बात को लेकर विवाद हो गया कि सफलता का श्रेय किसे मिले। तीनों स्वयं को सबसे महत्वपूर्ण बता रहे थे। अंतत: यह तय हुआ कि विवेक की शरण में चलकर न्याय करा लिया जाए। विवेक ने समाधान करने के लिए तीनों को अपने साथ चलने को कहा और अपने हाथ में एक टेढ़ी कील व हथौड़ा ले लिया। चलते-चलते वे लोग एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ एक बालक खेल रहा था। विवेक ने बालक से कहा- ''पुत्र! यदि तुम इस टेढ़ी कील को हथौड़े से ठोककर सीधा कर दो तो मैं तुम्हें पुरस्कार दूंगा।'' पुरस्कार का नाम सुनकर बालक की आँखें चमक उठीं। वह संकल्पपूर्वक कील ठोकने का प्रयास करने लगा, परंतु कील सीधी होना तो दूर, उससे हथौड़ा हिला भी नहीं। यह देख विवेक ने कहा- ''सफलता हेतु अकेला संकल्प निरर्थक है।''

अब विवेक उन्हें लेकर आगे चला तो एक श्रमिक सोता हुआ मिला। विवेक ने उसके सम्मुख भी वही शर्त रखी, परंतु श्रमिक थोड़ी देर पहले ही परिश्रम करके सोया था। उसने हथौड़े को एक तरफ रख दिया और बोला - ''उसे पुरस्कार की कामना नहीं है, वह इस समय आराम करना चाहता है।'' विवेक ने निष्कर्ष निकाला - ''केवल बल भी सफलता हेतु पर्याप्त नहीं है।'' आगे चलने पर उन्हें एक कलाकार मिला। विवेक ने कलाकार से कील को सीधी करने का अनुरोध किया और बदले में वही शर्त रखी। कलाकार ने कील को रेतीली भूमि पर रखा और हथौड़े से चोट मारी। कील तो सीधी नहीं हुई, परंतु सभी की आँखों में रेत भर गई। अब विवेक ने कहा - ''सफलता प्राप्त करने के लिए अकेली रचनात्मकता भी पर्याप्त नहीं है। संकल्प, बल व रचनात्मकता - तीनों के सम्मिलित प्रयास से ही सफलता प्राप्त होती है।''

'दावा' सच्चा या झूठा

महान साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चंद्र पर एक महाजन ने तीन हज़ार रुपये का दावा कर दिया। उसका कहना था कि उन्होंने उससे एक नाव खरीदी थी और कुछ रुपये उधार लिए थे, जिन्हें वे अभी तक लौटा नहीं पाए हैं। न्यायाधीश ने भारतेंदु जी को अकेले में बुलाकर पूछा कि क्या यह दावा सही है और यदि उन्होंने नाव ली थी तो उसका वास्तविक मूल्य क्या था? न्यायाधीश को जवाब देते हुए भारतेंदु हरिश्चंद्र बोले - ''महोदय! दावे में लिखा मूल्य सही है और उधार ली गई नकद राशि भी सही है। इनका मुझपर इतने का ही दावा बनता है।'' वहाँ उपस्थित लोगों ने उन्हें समझाने का प्रयत्न किया कि वे चाहें तो न्यायाधीश को कम राशि की बात कह दें, ताकि उनको कम मूल्य देकर सज़ा से छुटकारा मिल सके।

सबकी बातों को दरकिनार करते हुए भारतेंदु हरिश्चंद्र ने महाजन के दावे को पुन: सही ठहराया। न्यायाधीश को उन्हें सज़ा सुनानी पड़ी। महाजन को जब सारी घटना की जानकारी मिली तो उसने कहा - ''आप एक जाने-माने लेखक हैं। यदि आप अपने दावे से मुकर भी जाते तो मैं आपका कुछ नहीं कर सकता था।'' भारतेंदु हरिश्चंद्र बोल- ''आपने ही कहा कि मैं एक जाना-माना लेखक हूँ। ऐसे में मेरी सत्य पर चलने की ज़िम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। यदि मैं असत्य बोलूंगा तो कल किस मुँह से लोगों को सत्य पर चलने की प्रेरणा दे सकूंगा!'' ''महाजन, भारतेंदु हरिश्चंद्र की सत्यवादिता से इतना प्रभावित हुआ कि उसने अपना केस वापस ले लिया।

रिक्त होने का कारण...

जर्मनी के सम्राट फ्रेडरिक महान यह जानकर चिंतित हो उठे कि उनके देश की आर्थिक स्थिति निरंतर दयनीय होती जा रही है। जब राजकोष काफी कम रह गया तो उन्होंने एक दिन अपने राज्य के अधिकारियों को विचार-विमर्श हेतु बुलाया और पूछा- ''राजकोष के रिक्त होने का कारण क्या है?'' दरबार में यह प्रश्न पूछते ही सन्नाटा छा गया और सभी एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। उन्हीं अधिकारियों में उपस्थित एक अनुभवी महामंत्री ने सम्राट से कहा कि वे इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए तैयार हैं। यह कहकर उन्होंने मेज पर प्याले में रखे बर्फ के एक टुकड़े को उठाया और उसे अपने निकट बैठे व्यक्ति को देते हुए कहा- ''इसे आपके पास बैठे व्यक्ति को दे दें। इसे एक के बाद एक-दूसरे हाथों में बढ़ाते हुए अंतत: सम्राट तक पहुँचाना है।'' देखते-ही-देखते वह बर्फ का टुकड़ा अनेक हाथों से होता हुआ सम्राट के हाथ तक पहुँचा। वहाँ पहुँचते तक उसका आकार चौथाई हो चुका था।

सम्राट ने पूछा- ''बर्फ का टुकड़ा तो यहाँ आते-आते छोटा हो गया है। इसके माध्यम से आप क्या कहना चाहते हैं?'' वृद्ध महामंत्री ने अपना मंतव्य स्पष्ट करते हुए कहा- ''महाराज! जिस तरह यह बर्फ का टुकड़ा कई हाथों से होता हुआ आपके हाथों तक पहुँचने में अपने मूल वज़न का चौथाई रह गया, वैसे ही प्रजा से वसूले गए कर की राशि कई हाथों से गुज़रने के कारण सरकारी कोष तक पहुँचते-पहुँचते चौथाई ही रह जाती है।'' सम्राट वृद्ध महामंत्री का कहा समझ गए और उन्होंने कड़े निर्णय लेते हुए भ्रष्ट कर्मचारियों की छँटनी शुरू कर दी। कुछ ही दिनों में राजकोष में बढ़ोत्तरी होने लगी।

सेवा और साधना दोनों ही

एक संत से एक युवक ने पूछा - ''महाराज! मैं अपने कार्यों में अत्यंत व्यस्त रहता हूँ। उपासना-साधना के लिए समय नहीं निकाल पाता हूँ। तनाव रहने के कारण रात को नींद की गोली लेकर सोना पड़ता है। तनाव कम करने के लिए कोई सरल उपाय बताने की कृपा करें।'' संत ने उत्तर दिया- ''बंधु! सुबह काम पर जाने से पहले माता-पिता के चरण-स्पर्श कर उनका आशीर्वाद लो। साथ ही अपनी कमाई का कुछ अंश, गरीबों और असहायों की सेवा के लिए अर्पित करना प्रारंभ करो।'' उस युवक ने उसी दिन से संत की बतलाई बातों का पालन आरंभ कर दिया। वो माता-पिता के चरण स्पर्श ही नहीं अपितु अच्छी तरह से उनकी सेवा करने लगा। साथ ही अपने तन मन धन से गरीबों की भी सेवा करने लगा।

कुछ महीने बाद जब वह संत के दर्शन के लिए पुन: आया तो प्रसन्नचित्त होकर बोला - ''महाराज! आपकी बताई बातों से मेरा कार्यों में मन लगने लगा है, परंतु अभी रात्रि की निद्रा की समस्या का समाधान नहीं हो पाया है।'' संत बोले- ''मित्र! तुमने अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित किया है, इससे कार्यों से मिलने वाला तनाव समाप्त हो गया है। परंतु निद्रा की समस्या पहले से बैठे तनावों के कारण है। उनकी मुक्ति के लिए तुम्हें साधना की ज़रूरत है, जिससे तुम्हारी आध्यात्मिक जागृति होगी और तुम्हारा पूर्व-संचित दुष्कर्मों का क्षय होता जायेगा, जिससे चित्त निर्भार होता जायेगा। चित्त के हल्का होते ही मन स्वत: ही शिथिल हो जाता है।'' युवक ने उनके निर्देश का पालन कर साधना आरंभ कर दी, जिससे वह तनावमुक्त रहने लगा।

श्रीरामपुर-महा.। नवनिर्वाचित नगराध्यक्षा अनुराधा आदीक को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मंदा, ब्र.कु. ताराचंद, नगरेविका स्नेहल खोरे तथा अन्य।

रीवा-म.प्र.। प्रसिद्ध उद्योगपति मनोज गौड़,जे.पी. सीमेंट के साथ ज्ञानचर्चा के पश्चात् चित्र में उनके साथ ब्र.कु. निर्मला, डी.एस. राणा, ब्र.कु. डॉ. अर्चना, ब्र.कु. नम्रता तथा ब्र.कु. प्रकाश।

गोवा-पणजी। वृन्दावन इंस्टीटय़ूट ऑफ नर्सिंग एज्युकेशन,कोल्वाले में बी.एस.सी. नर्सिंग फर्स्ट इयर स्टूडेंट्स के लिए आयोजित कार्यक्रम में आमंत्रित किये जाने पर वहाँ उपस्थित हैं ब्र.कु. शोभा। साथ हैं डॉ. दिगम्बर नाइक, मंगला नाइक,ट्रस्टी,नाइक मेमोरियल ट्रस्ट, डॉ. मनीषा कुलकर्णी तथा अन्य।

नासिक-महा.। क्लास वन गवर्नमेंट ऑफीशियल्स को तीन दिवसीय ट्रेनिंग कराने के पश्चात् समूह चित्र में उनके साथ ब्र.कु. डॉ. डोनिका।

बाँटवा-गुज.। माणावदर में 'परमात्म शक्ति शांति अनुभूति आध्यात्मिक शिविर' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. मधु, धारासभ्य जवाहर चावडा, मामलतदार बेरिया साहब, व्यापारी आगेवान प्रेमजी मानवर, एस.बी.आई. के मैनेजर जे.जे. गुर्जर तथा अन्य।

ग्वालियर-म.प्र.। अग्रवाल महिला मंडल द्वारा बसंत पंचमी पर आयोजित कार्यक्रम में 'नारी शक्तियों की खान है शिवशक्ति है' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. आदर्श, गायत्री बंसल,चेयरमैन,अग्रवाल वुमेन कमेटी,आगरा, पूजा अग्रवाल,सेक्रेट्री,अग्रवाल वुमेन कमेटी तथा अन्य महिलाए।

भावनात्मक देह की दीवार

समझ में आने के बाद, यह समझ में आया कि दुनिया की सारी समस्याओं की जड़ क्या हैं, तो पता चला कि जड़ तो हम हैं! यह हो गया जड़ का मोटा रूप, लेकिन इससे एक सूक्ष्म रूप भी हैं, वह हैं, हमारा भावनात्मक मन रूपी दीवार या भावनात्मक देह रूपी दीवार, जिससे सभी अपना सिर ज़बरदस्ती, ना चाहने पर भी टकरा रहे, टकराना पड़ रहा हैं!

आज हम दुनिया की एक कहावत को आपके सामने सत्य रूप में लेकर आ रहे हैं, जिसमें सभी कहते कि ''जीता सारे लोक को, हारा अपनी कोख को''। बात सत्य भी है, पूरी दुनिया से लड़कर हम जीत जाते हैं, लेकिन अपनों से, या जिनसे हम भावनात्मक रूप से जुड़े हैं उनसे निकलना मुश्किल लगता है।

सबसे पहले तो जानते हैं कि भावनात्मक मन है क्या? यह पानी की तरह होता है, जो रुकावट के आने के बाद सहज ही रास्ता बदल लेता है। कहने का भाव, यह रुकावट पसंद नहीं करता। अगर कोई भी नकारात्मक ऊर्जा आ जाए, जैसे भय, ईर्ष्या, नफरत, तो यह उसी हिसाब से अपने संकल्पों को, या विचारों को ले आता है। इसी को आम भाषा में दिल भी कहते हैं। इसमें तर्क या विश्लेषण की कोई जगह नहीं होती है।

मनोवैज्ञानिक कहते हैं, प्यार व स्नेह भावनात्मक देह की एक नींव है। प्रत्येक इंसान इस नींव के साथ ही जुड़ा होता है। आपकी आत्मा के अंदर जो प्यार है, वह आपको एक सुरक्षा देने का प्रयास करता है। जब वह प्यार व स्नेह आपको नहीं मिलता है, तो उसके अभाव में आप बाह्य व्यक्तियों या परिस्थिति से आपूर्ति का प्रयास करते हैं। इसे मनोवैज्ञानिक भाषा में आंतरिक शिशु या इनर चाइल्ड भी कहते हैं।

इस इनर चाइल्ड का विकास शुरू के एक से बारह महीने के बीच होता है। उसमें बच्चों को यदि माता-पिता से, किसी से भी प्यार व स्नेह नहीं मिला, तो वह अगले दो से तीन साल में वही मान्यताएँ बना लेता है, जिसके आधार से वह लोगों से बड़ा होने के बाद मिलना शुरू करता है। जैसे किसी से प्यार से मिले, किसी से ईर्ष्या से मिले, किसी से क्रोध से, किसी से निराशा से। जब उस आंतरिक शिशु के साथ यह घटनाएँ होती हैं तो उसके अंदर तीन मान्यताएँ घर कर जाती हैं। पहला, उसे लगता है कि कहीं वो सुरक्षित नहीं है, अर्थात् उसे मृत्यु का भय लगता है। जसके कारण उसे क्रोध भी आता है। उसके जीवन में दो रंग होते हैं, या तो काला या तो सफेद। कहने का

भाव है कि वो हमेशा जीवन में मरने से नहीं डरता है, मृत्यु थोड़ी नहीं होती, वो पूरी होती है ना, तो उसको जीवन में सबकुछ सम्पूर्ण चाहिए। वो सबको यही धमकी देता है कि मैं नहीं रहूंगा, मैं मर जाऊंगा, मैं चला जाऊंगा, ताकि उसे सुरक्षा मिले, ताकि सब उससे यही कहें कि तुम जियो, हमारे साथ रहो, हमें अच्छा लगता है, लेकिन दुर्भाग्यवश ऐसे बच्चों के साथ ये कहने वाला कोई नहीं होता, क्योंकि जिसको वो ये बात कह रह होता है, वो पहले से ही भावनात्मक रूप से मज़बूत होते हैं, उन्हें इन बातों की कोई परवाह नहीं होती।

दूसरा, उसे लगता है कि कोई उसे प्यार नहीं करता। अर्थात् माता-पिता के प्यार के अभाव में उसे लगता है कि कोई उसे छोड़ के तो नहीं चला जायेगा, अर्थात् उसे निरंतर परित्याग का भय रहता है। ऐसे बच्चों के माता-पिता तो केवल उनकी शारीरिक आवश्यकताओं को ही पूरा कर पाते हैं। उन्हें हमेशा लगता है कि वे किसी चीज़ के लायक नहीं। खासकर विशिष्ट प्यार के लायक हैं। ऐसे बच्चे बड़े होकर किसी और को प्यार करते हैं अपने प्यार की पूर्ति करने के लिए। जबरन प्यार देते हैं, चाहे वह प्यार ले ना ले। जिसे वह प्यार करते वह उन्हें प्यार नहीं करता। ऐसे बच्चों को क्रेज़ी कहते हैं।

तीसरा डर यह है कि उसे लगता है कि इस दुनिया में उसका कोई अस्तित्व नहीं है। यह उन बच्चों में होता है जिसे माँ-बाप ने भरपूर अर्थात् शारीरिक, मानसिक, आर्थिक रूप से भरपूर किया हो, उनकी स्वतंत्रता छीन ली हो। वह बाद में स्वतंत्र होना चाहते हैं और बड़े होकर अलग हो जाते हैं।

ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

ये उपरोक्त तीन डर लगभग सभी में होते ही हैं, चाहे कोई माने या ना माने। ये हो सकता है कि किसी में कम किसी में ज़्यादा।

अब आप बताओ, ये दीवार टूटना इतना आसान है! इतनी गहरी है, इसे तोड़ने का तरीका सिर्फ एक है, वो है, उसकी फिर से प्रोग्रामिंग की जाए। इसलिए दुनिया में लोग डिप्रेशन में जा रहे हैं।

कहते हैं, क्या करें, कोई प्यार नहीं करता, इसलिए उस प्यार की पूर्ति के लिए वे किसी देह से, किसी वस्तु से प्यार करते हैं, लेकिन प्यार की पूर्ति तो हो ही नहीं सकती, चाहे कोई कुछ भी कर ले।

इसलिए परमात्मा ने आकर वह दीवार तोड़ी कि देह, देह के सम्बन्धियों से मिला प्यार सीमित है, जो तुम्हें कभी भी हील नहीं कर सकता। हील सिर्फ मैं कर सकता हूँ। समझो मुझे, मुझसे जुड़ो तो तुम्हारा डर निकल जायेगा। मरने का डर, या कोई भी डर।

उपलब्ध पुस्तकें

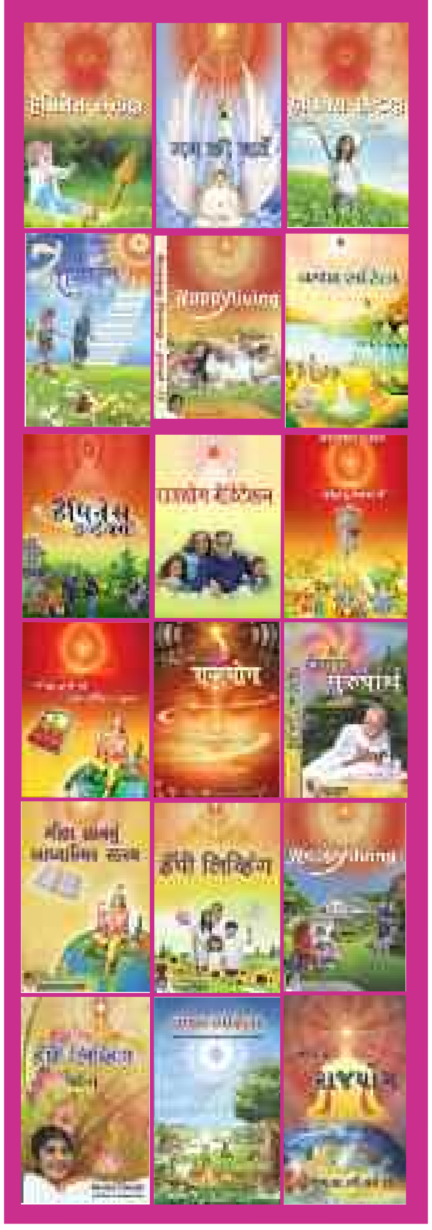

मन की बातें

-ब्र.कु. सूर्य

प्रश्नः- मेरा नाम सतीश है, मुझे हमेशा ही बहुत ज़्यादा चिंता और डर बना रहता है, इस कारण मैं ठीक से पढ़ भी नहीं पाता और सो भी नहीं पाता। मुझे अपने भविष्य की बहुत चिंता है, मैंने डॉक्टर्स से बहुत इलाज भी करवाया है, परंतु कोई फायदा नहीं हुआ।

उत्तरः- मानसिक रोग संसार में दिनोंदिन बढ़ते जा रहे हैं, अनेक युवक भी इसके शिकार हो रहे हैं। परन्तु दवाइयों के द्वारा इसको ठीक नहीं किया जा सकता। क्योंकि ये रोग मन के हैं और मन की कोई दवाई नहीं होती। प्रत्येक मनुष्य ने जन्म-जन्म जो विकर्म किये हैं और विकारों का भोग किया है वे सब अवचेतन मन में समाये हुए हैं। इस समय उसी अवचेतन मन से बहुत बैड एनर्जी मस्तिष्क में आ रही है। इसका बुरा प्रभाव ब्रेन पर पड़ता रहता है। ब्रेन की कई शक्तियां नष्ट होती रहती हैं और ब्रेन के कई केंद्र काम करना भी छोड़ देते हैं। इसके कारण ब्रेन कमज़ोर होने लगता है और वह किसी भी प्रकार के दबाव को सहन नहीं कर पाता।

आप रोज़ सवेरे उठकर और शाम को 108 बार लिखें, मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और सारे दिन में विभिन्न स्वमानों का अभ्यास करें। इससे उत्पन्न वायब्रेशन्स अवचेतन मन से आने वाली बैड एनर्जी के प्रभाव को नष्ट करेगी। एक अव्यक्त मुरली का अध्ययन रोज़ करें ताकि आपका मन पॉज़ीटिव रहे। पानी को हमेशा चार्ज करके पीयें। सवेरे आँख खुलते ही निम्नलिखित संकल्प इसी क्रम से पाँच बार दोहरायें... मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ...मैं बहुत निर्भय हूँ....मैं पदमापदम भाग्यशाली हूँ...मैं बहुत सुखी हूँ....मैं एक महान आत्मा हूँ...। ये थोड़े से अभ्यास करने से आप इस मानसिक बीमारी से मुक्त हो जाएंगे।

प्रश्नः- मैं एक कुमार हूँ। मुझे बचपन से ही देह की आकर्षण की समस्या है। इससे मेरा योग भी नहीं लगता। मेरी ओर भी बहुत लोग आकर्षित होते हैं। मैं पूर्ण डिटैच होने के लिए क्या करूँ?

उत्तरः- आपको दो बातों की साधना अच्छी तरह करनी होगी। प्रथम - मैं आत्मा भृकुटि सिंहासन पर विराजमान हूँ...आप अपने चमकते हुए ज्योति स्वरूप को देखें। दूसरी - सभी की भृकुटि में चमकती हुई आत्मा देखना। ये दोनों अभ्यास तीन मास तक प्रतिदिन दस बार करें।

साथ-ही-साथ अपनी पवित्रता को दृढ़ व नैचुरल बनाने के लिए 5 संकल्पों को फीलिंग में लायें...

1. मैंने स्व-इच्छा से व परमात्म-इच्छा से ये पवित्रता का मार्ग चुना है, अब यही मेरा जीवन है... 2. मैंने एक बार गंदगी का मार्ग छोड़ दिया, थूक दिया, अब थूक कर पुन: चाटना नहीं है... 3. जिस मार्ग पर एक बार कदम रख दिया, अब पीछे मुड़कर नहीं देखना है... 4. मैंने पवित्रता का वचन भगवान को दे दिया है....वचन देकर तोड़ना नहीं है... 5. अब मुझे अपवित्रता के मार्ग पर जाना ही नहीं है तो उसका चिंतन क्यों करें... इस तरह के संकल्प पवित्रता को अति शक्तिशाली बना देंगे।

प्रश्नः- यद्यपि मैंने ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा कर ली है, तो भी ये काम मुझे कठिन लग रहा है। मैं एक कुमार हूँ। मैंने एक बार भगवान का हाथ पकड़ा है सो छोड़ूंगा नहीं। परन्तु मुझे मदद चाहिये।

उत्तरः- ब्रह्मचर्य सबसे बड़ी तपस्या है। और यह राजयोग की तपस्या का आधार भी है। यह आजकल कठिन इसलिए है की अन्न भी तामसिक है व चारो ओर निगेटिविटी है। काम-वासना की तो मानो आंधी चल रही है, युवक तो इसे ही जीवन मानते हैं, उन्हें पता ही नहीं कि जीवन में तो इससे ऊपर भी बहुत कुछ है। आप महान हैं जो आपने परमात्म-श्रीमत और पवित्रता को अपनाया है। याद रहे कुछ लाख लोगों की ये महान पवित्रता हमारे देश को सबसे महान बनायेगी।

योगाभ्यास पर आप ध्यान दें। राजयोग से आंतरिक ऊर्जा उर्ध्वगामी होकर सूक्ष्म शक्ति का रूप ले लेती है, इससे ब्रह्मचर्य सहज हो जाता है। साथ-ही-साथ मनन चिंतन में भी इस शक्ति का यूज़ होता है। शारीरिक परिश्रम में भी यह शक्ति लगती है। कुमारों को तीनों ही करने चाहिए। आलसी व ठण्डा नहीं होना चाहिए। आसन व प्राणायाम भी करने चाहिए।

आपका योग का चार्ट 4 घण्टा होना ही चाहिए। इसमें स्वमान, अशरीरीपन, रुहरिहान व योग सब शामिल हो। भोजन खाने से पूर्व भोजन को दृष्टि देते हुए 7 बार अभ्यास करें कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ। दूध को दृष्टि देते हुए 21 बार यही अभ्यास करके दूध पियें। इससे कर्मेन्द्रियाँ शीतल हो जायेंगी व ब्रह्मचर्य की तपस्या परम आंनद में बदल जायेगी।

देखिए 'अपना DTH' में फ्री 24 घंटे 'पीस ऑफ माइंड चैनल' ...उसके साथ 100 अन्य चैनल भी फ्री
अपने डी.टी.एच. डिश के डायरेक्शन का करें परिवनर्तन...
Satellite Position = 75° East, Satellite = ABS-2
LNB Frequency = 10600/10600, Frequency = 12226/12227
Polarization = H, Symbol = 44000
System = MPEG-2(DVB-S) / MPEG-4(DVB-S2)
FEC = 3/4, 22K = On/Auto, Mode = All/FTA
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें... 8104777111/7014140133

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मेहसाना-गुज.। खेरवा गाँव में नवनिर्मित 'ब्रह्माकुमारीज़ डिवाइन रिट्रीट सेंटर' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी। साथ हैं गुजरात ज़ोन की डायरेक्टर ब्र.कु. सरला, ब्र.कु. हंसा, ब्र.कु. शारदा, ब्र.कु. दिव्यप्रभा,मुम्बई, ब्र.कु. सरला,मेहसाना, निमिषा पटेल,नगरपालिका प्रमुख, ब्र.कु. तृप्ति, ब्र.कु. राजू,माउण्ट आबू, ब्र.कु. चंद्रिका, ब्र.कु. कुसुम, हसमुख भाई पटेल तथा अन्य।

जो पाया वो कहाँ से आया..?

उंगली उठाना कितना आसान है, मगर सच की रोशनी में सारे इल्ज़ाम गायब हो जाते हैं।

यह जुमले देखिए...
हमें वो दु:खी कर गया।
पता नहीं दु:ख को हमारे घर का रास्ता किसने दिखाया।
तुमने मेरा दिल तोड़ दिया।
तुम गलत हो।

इन तमाम जुमलों में किसी और से मिले दु:ख या परेशानी का ज़िक्र है। कोई और ज़िम्मेदार है दु:ख के लिए, यही कहा गया है। दूसरों पर उंगली उठाने से पहले क्या यह सोचने की कोशिश हम करते हैं कि दु:ख पाने में हमारा कितना हाथ है। चहक को चहक ढूंढ़ती है और आंसू आंसू को तलाश लेते हैं। जब हम किसी से धोखा खाते हैं, तो उसमें हमारे अंधे विश्वास का हाथ होता है। किसी और की तरफ इशारा करके हम पीड़ित बनने में ज़्यादा इत्मिनान महसूस करते हैं। अगर उसी समय सच को मानकर, बिना कोई शोर मचाए आगे बढ़ने की ठानें, तो मिले धोखे का कष्ट तो कम होगा ही, अपनी भूलों का अहसास भी रहेगा।

यह मनोविज्ञान का सामान्य सा सूत्र है कि हम हमेशा खुद को पीड़ित और दु:खी बनाकर पेश करते हैं ताकि सहानुभूति मिले या हमारी भूल ढक जाए या कम से कम दूसरों की तवज्जो तो मिले ही। हमेशा यह सुनना अच्छा लगता है - आप तो भले हैं... लेकिन।

भला करें या नहीं, लेकिन एक बार अपने किए पर भी नज़र डालने की ज़रूरत है। पीड़त बने रहने से कुछ देर की सहानुभूति तो मिल जाती है, लेकिन घटना की सच्ची समझ नहीं मिल पाती। कोई सीख, कोई दिशा-निर्देश नहीं मिल पाता ताकि इंसान के तौर पर हम कुछ बढ़ सकें, विकास करें। यह तभी हो सकता है, जब पीड़ित का खोल उतारकर देखा जाए कि दरअसल, जो हुआ, वो हुआ कैसे। अंत में ज़रूर आप ठगे गए, लेकिन क्या सदा से ऐसा ही था? कहीं शुरुआत में ही तो अंत का स्वरूप नहीं छुपा हुआ था?

सुख या खुशी हम चुनते हैं। कोई इंसान, कोई वस्तु, कोई प्रक्रिया इतनी ताकतवर नहीं कि हमारी मर्ज़ी के बगैर हमारे मन पर कब्जा कर सके। प्रताड़नाओं के शिविर में भी रहकर लोग मन के मौसम को बासंती बनाए रखते हैं। खुशियों का बाँह पसारकर इंतज़ार करने के बजाय आतुर मन से उन्हें खोजने और पाने की कोशिश करते रहें, तो किसी और को कभी इल्ज़ाम नहीं देना होगा। जो खोजा, जो पाया, उसके लिए सदा से हम ज़िम्मेदार थे और रहेंगे।

- रचना समंदर

गांधीधाम-कच्छ। गुर्जर क्षत्रिय समाज द्वारा आयोजित 'समाज सेवा के नये आयाम' विषयक स्नेह मिलन कार्यक्रम में ब्र.कु. गोदावरी एवं ब्र.कु. अमीरचंद को मोमेन्टो देकर सम्मानित करते हुए महासभा के राष्ट्रीय प्रमुख कुंवरजी भाई। साथ हैं ब्र.कु. ओंकार, ब्र.कु. बाबूभाई, ब्र.कु. मीना, ब्र.कु. भारती तथा अन्य वरिष्ठ पदाधिकारीगण।

मुम्बई-भिवंडी। 'संत गाडगे बाबा सफाई अभियान' में भाग लेते हुए कमिश्नर योगेश मासे, मेयर तुषार चौधरी, ब्र.कु. बिन्दु, ब्र.कु. प्रमिला, ब्र.कु. दीपा तथा अन्य।

ग्वालियर-सिटी सेंटर। कृषि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 'व्यक्तित्व विकास शिविर' में अपने विचार व्यक्त करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. चेतना, विश्वविद्यालय के डीन जे.पी. दीक्षित, ब्र.कु. विपुल, डॉ. रीति सिंह, डॉ. पान्ड्या, डॉ. उमेश, डॉ. अनुराधा एवं समस्त छात्र-छात्रायें।

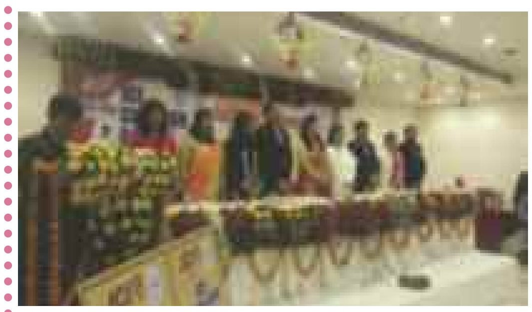

ग्वालियर-इंदिरागंज। जे.सी.आई. क्लब द्वारा आयोजित 'इन्सटॉलेशन सेरेमनी ऑफ प्रेसीडेंट ऑफ जे.सी.आई. ग्लोबल ग्वालियर' कार्यक्रम में 'समय श्वास संकल्प के साथ-साथ पानी और अन्न की भी संभाल' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् मंच पर उपस्थित हैं ब्र.कु. आदर्श बहन, सुधीर अग्रवाल,ज़ोनल एस.पी., जे.एफ.एफ. कविता सोनी,ज़ोन प्रेसीडेंट, जे.सी. अजय शर्मा,ज़ेड.वी.पी. तथा अन्य।

रतलाम-नज़रबाग कॉलोनी। रेलवे कॉन्फ्रेन्स रूम में लोकोमोटिव्स पिलेट्स के लिए आयोजित 'स्ट्रेस मैनेजमेंट' कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए सीनियर डी.ई. संजीव मेहता। साथ हैं ए.ई. विश्वजीत चौधरी, सी.टी.सी.सी. संजय सोलंकी, ब्र.कु. सीमा, ब्र.कु. दिव्या तथा अन्य।

वर्धा-महा.। विजय विद्यालय,सिंदी रेलवे में 'व्यसन मुक्ति कार्यक्रम' में पॉवर प्वाइंट प्रेज़ेन्टेशन द्वारा समझाते हुए सुशील हिम्मत सिंगका कॉलेज की प्रो. बी.के. अर्पणा देवडे। मंचासीन हैं विद्यालय के सचिव सुधाकर खेडकर, प्राचार्य इंदुताई उमाटे, ब्र.कु. दर्शना तथा ब्र.कु. रीना।

इन्दौर-सुदामा नगर। पाकिस्तान से आयीं गीता बहन के सेवाकेन्द्र में आने पर ज्ञानचर्चा के पश्चात् उनके साथ ब्र.कु. दामिनी।

‘आध्यात्मिकता’ व्यापार में सफलता की नींव

दीप प्रज्वलित करते हुए बायें से ब्र.कु. लालजी भाई, ब्र.कु. जगमोहन अग्रवाल, ब्र.कु. डॉ. मोहित, ब्र.कु. योगिनी, दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. गीता, अन्ना साहेब चाकोटे तथा ब्र.कु. मोहन। सभा में देशभर से आये व्यवसाय क्षेत्र से जुड़े लोग।

शांतिवन। मनुष्य अपनी खुशी बाह्य भौतिक पदार्थों में ढूंढ़ रहा है, लेकिन आंतरिक खुशी अनुभव करने के लिए आत्म अनुभूति एवं परमात्म अनुभूति करने की ज़रूरत है। उक्त विचार ब्रह्माकुमारीज़ के व्यापार एवं उद्योग प्रभाग द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय सम्मेलन में संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने व्यक्त किये।

प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. योगिनी ने कहा कि बदलते समय के साथ-साथ साइंस और टेक्नोलॉजी भी एडवांस हो गई है। लेकिन साथ-साथ जीवन तनावमुक्त हो गया है, इसलिए हमें अपने जीवन में आध्यात्मिकता को शामिल करना चाहिए। उद्योग में योग शब्द समाया हुआ है। इसके साथ ही उन्होंने सभी मेहमानों को राजयोग का अभ्यास कराया।

व्यापार एवं उद्योग प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु. गीता ने सभी आये हुए मेहमानों का स्वागत किया तथा संस्था की गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अन्ना साहेब चाकोटे,प्रसिद्ध उद्योगपति,कोल्हापुर ने अपने वक्तव्य में ब्रह्माकुमारीज़ के कार्य की सराहना करते हुए कहा कि जैसे बिज़नेसमैन अच्छे बिज़नेस के लिए हमेशा तैयार रहता है, वैसे ही यहाँ से हमें जो ऊर्जा और शिक्षा मिलेगी, वह हम स्वयं में भरकर सुख शांति का अनुभव करके फिर इस ऊर्जा का उपयोग हमारे समाज, कंपनी तथा देश के लिए करेंगे।

कार्यक्रम में व्यापार एवं उद्योग प्रभाग के मैनेजमेंट विशेषज्ञ ब्र.कु. स्वामीनाथन ने भी बिज़नेस में आध्यात्मिकता को शामिल कर अपने द्वारा किये जा रहे व्यापार में बढ़ोत्तरी के साथ साथ जीवन में सुख का भी समावेश हो, उसके लिए अनेक गुर सिखाए।

कार्यक्रम के मध्य में राजयोग मेडिटेशन के महत्व को बताया गया और साथ साथ उसे अपने रोज़मर्रा के जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित किया गया।

इस अवसर पर मुम्बई से आये व्यापारी हरीश भाई, मोहनभाई पटेल आदि ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम के दौरान मंच का कुशल संचालन ब्र.कु. क्रीना ने किया। कार्यक्रम सौहार्द माहौल में पूर्ण हुआ।

इनको सम्मानित किया गया इस अवसर पर

सम्मेलन में हाल ही में जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा में पाक सैनिकों की गोलाबारी के दौरान शहीद हुए बांसवाड़ा, राज. के जवान हर्षित भदोरिया तथा उरी सेक्टर में आतंकी हमले में शहीद हुए राजसमंद, राज. के राजवा गांव के हवलदार निम्बसिंह रावत के परिजनों को व्यापार एवं उद्योग प्रभाग की ओर से दादी रतनमोहिनी के कर कमलों से एक-एक लाख रुपये का चेक प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर ब्र.कु. योगिनी ने कहा कि शहीदों के परिजनों को सहयोग राशि प्रदान करना गर्व की बात है, ताकि लोगों का सेना के प्रति रुझान बढ़ सके। इसलिए ऐसे प्रयास करने चाहिए।

कार्यक्रम में दिल्ली के सुप्रसिद्ध व्यवसायी जगमोहन अग्रवाल ने कहा कि ऐसे लोगों की मदद करना सुकून पैदा करती है। भारत के नागरिकों को बढ़-चढ़कर ऐसे कार्य में हिस्सेदारी निभानी चाहिए। इस अवसर पर परिजनों ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था का यह प्रयास सराहनीय है।

स्वर्णिम प्रशासन मध्य प्रदेश जागृति अभियान का भव्य शुभारंभ

ग्वालियर-म.प्र.। कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर विशिष्ट अतिथि कलेक्टर डॉ. संजय गोयल ने अपने वक्तव्य में कहा कि अभियान का उद्देश्य शासन को सुदृढ़ एवं सशक्त बनाना है और सभी को अपने कार्य के द्वारा सुख प्रदान करना है। उन्होंने कहा कि हमें कार्य में टेंशन मुक्त होकर अपनी सेवाओं को कुशलतापूर्वक करना है। गोयल ने इस अभियान की पहल को मध्य प्रदेश के लिए एक सुनहरा अवसर बताते हुए सराहनीय कार्य बताया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संभागायुक्त एस.एन. रूपला ने कहा कि जीवन के लिए महत्वपूर्ण इस कार्यक्रम में आकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। आज समाज में भौतिक प्रगति हुई, रोटी, कपड़ा, मकान तो है पर आज सुख शांति और प्यार जीवन में नहीं है। उन्होंने कहा कि कार्य करते हुए कैसे प्रसन्न रहा जाए, ये ब्रह्माकुमारी बहनों से सीखना चाहिए। उनका उद्देश्य ही यही है कि सभी प्रसन्न रहकर अपना जीवन जीयें।

ब्र.कु. अवधेश बहन,क्षेत्रीय निदेशिका एवं प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ने कहा कि मनुष्य के जीवन में प्रशासन का महत्व हर स्तर पर है चाहे वह प्रशासन स्वयं के जीवन का हो, समाज का हो, परिवार हो या सरकार का। किसी भी संस्थान व प्रशासनिक तंत्र की कार्यक्षमता, सफलता की धरोहर उस तंत्र का प्रशासक व्यवस्थापक और प्रबंधक है। अत: प्रशासन की श्रेष्ठता का तात्पर्य है मानव मात्र में श्रेष्ठता लाना।

उन्होंने बताया कि अभियान के अंतर्गत आपदा प्रबंधन, व्यसन मुक्त जीवन, ग्राम विकास, नारी सशक्तिकरण, बेटी बचाओ सशक्त बनाओ आदि विषयों के तहत जन सामान्य को जागृत किया जायेगा।

ब्र.कु. पूजा,फरीदाबाद ने कहा कि दूसरों पर प्रशासन करने से पहले स्व पर शासन करना बेहद ज़रूरी है, जिसे हम राजयोग के अभ्यास से सहज ही कर सकते हैं। राजयोग एक ऐसी सरल प्रक्रिया है जिसे कोई भी अपने जीवन में सहजता से अपना सकता है।

ब्र.कु. डॉ. सुनीता,सूरत ने कहा कि श्रेष्ठ प्रशासन के लिए सर्वोच्च प्रशासक से शक्तियाँ लेकर अपने कार्यों को सुचारू रूप से कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि एक अच्छा प्रशासक वो है जो नकारात्मक माहौल में सकारात्मक ढूंढ़ ले। हमें कीचड़ में रहते हुए कमल की तरह उससे न्यारा रहने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम के दौरान बाल कलाकारों ने अपनी सुंदर प्रस्तुतियों के माध्यम से अभियान के उद्देश्य को उजागर किया। अंत में सभी का धन्यवाद देते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श ने सभी को सेवाकेन्द्र में आकर राजयोग का पाठ्यक्रम करने के ईश्वरीय निमंत्रण देने के पश्चात् राजयोग का अभ्यास भी कराया। कार्यक्रम का कुशल संचालन ब्र.कु. ज्योति ने किया व ब्र.कु. प्रहलाद ने आभार प्रदर्शित किया।

कार्यक्रम में शहर के गणमान्य लोग दिखाई दे रहे हैं। मंचासीन हैं ब्र.कु. आदर्श, ब्र.कु. सुनीता, एन.एन. रूपला, डॉ. संजय गोयल, ब्र.कु. अवधेश, ब्र.कु. गीता तथा ब्र.कु. ज्योति।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088,
Email- omshantimedia@bkivv.org, mediabkm@gmail.com, Website- www.omshantimedia.info
सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये । विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क ‘ओमशान्ति मीडिया’ के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 14th Feb 2017
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।